सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 06 जुलाई, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 297, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी- भारत की एकता के अमर प्रहरी

जयंती पर विशेष

हेमंत खण्डेलवाल

लेखक मप्र भाजपा के अध्यक्ष व बैतूल विधायक हैं।

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो अपने विचारों, संघर्षों और बलिदानों से समय की धारा को मोड़ने का संकल्प रखते हैं। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ऐसे ही युगपुरुष थे, जिनकी राष्ट्रभक्ति, दूरदृष्टि और दृढ़ संकल्प ने भारत की एकता-अखंडता को सुदृढ़ किया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ऐसे ही एक युगदृष्टा थे, जिनका जीवन भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता के लिए समर्पित था। वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि शिक्षाविद, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रबल प्रवक्ता थे। 6 जुलाई को उनका जन्मदिवस केवल एक स्मरण तिथि नहीं, बल्कि राष्ट्रनिष्ठा, त्याग और सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात जम्मू-कश्मीर को लेकर जो परिस्थितियाँ निर्मित हुईं, वे राष्ट्र की एकता के लिए चुनौती बन गई थी। अनुच्छेद 370 और 35ए जैसे प्रावधानों ने जम्मू-कश्मीर को भारत से पृथक करने का प्रयास किया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इस वैचारिक विभाजन का डटकर विरोध किया। उनका स्पष्ट मत था कि 'एक देश में दो प्रधान, दो विधान और दो निशान नहीं चल सकते।' यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि उनका जीवन दर्शन था। उन्होंने कहा था कि जब कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, तो वहाँ भी भारत के समान संविधान और शासन होना चाहिए। अपने इस सिद्धांत को सत्य सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया, वर्षों बाद उनका सपना साकार हुआ जब 2019 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 और 35ए को निरस्त किया गया। यह कदम केवल एक संवैधानिक सुधार नहीं था, बल्कि यह भारत की एकता और अखंडता को मजबूत करने का ऐतिहासिक संकल्प था। इस निर्णय के पीछे डॉ. मुखर्जी के राष्ट्रवाद की विचारधारा स्पष्ट रूप से झलकती है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय राजनीति में एक स्पष्ट और सशक्त राष्ट्रीय विचारधारा प्रस्तुत की। जब पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में वैचारिक प्रतिबद्धताएँ राष्ट्रहित से टकराने लगीं, तब उन्होंने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। यह केवल पद का त्याग नहीं था, बल्कि राष्ट्रहित के लिए एक साहसिक और कर्तव्य निष्ठ कदम था। इसके बाद उन्होंने भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जो भविष्य में भारतीय जनता पार्टी के रूप में विकसित होकर देश की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बनी। डॉ. मुखर्जी का सबसे बड़ा संघर्ष जम्मू-कश्मीर की 'परमिट प्रणाली' के खिलाफ था। यह व्यवस्था कश्मीर में भारतीय नागरिकों की स्वतंत्र आवाजाही को सीमित करती थी, जिससे भारत के अंदरूनी हिस्सों को एक-दूसरे से जोड़ना मुश्किल हो रहा था। 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर की यात्रा करने का साहस दिखाया, जिसके पश्चात उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। श्रीनगर की जेल में रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु 23 जून 1953 को हुई। अत्यंत पीड़ादायक है कि न उन्हें समुचित चिकित्सा व्यवस्था प्रदान की गई और न ही उनकी मौत की निष्पक्ष जांच की गई। उनकी माता श्रीमती योगमाया देवी ने इसे 'मेडिकल मर्डर' करार दिया, पर सत्ता तंत्र मौन रहा। डॉ. मुखर्जी का यह बलिदान व्यर्थ नहीं गया। उनके निधन के कुछ सप्ताहों के भीतर ही कश्मीर की परमिट प्रणाली समाप्त कर दी गई और धीरे-धीरे वह व्यवस्था बदली, जिसने देश के भीतर अलगाव और तनाव पैदा किया था। हालांकि कांग्रेस सरकारों ने दशकों तक उनकी चेतावनियों को नजरअंदाज किया, परन्तु उनकी विचारधारा आज भी भारतीय राष्ट्रवाद का आधार है।

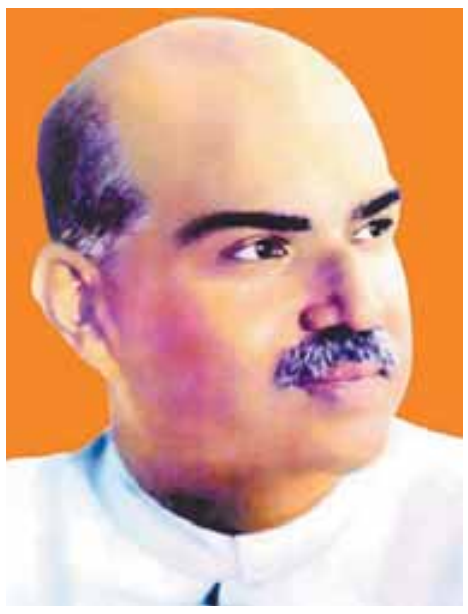

2004 के बाद जब देश में कांग्रेस की सत्ता रही, तब जम्मू-कश्मीर को विशेष स्वायत्तता देने की बातें पुनः उठी। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 2010 में जम्मू-कश्मीर की स्वायत्तता की बात कहकर भारत की जनता के हितों के साथ खिलवाड़ किया। कांग्रेस ने पीडीपी की कठपुतली बनकर आतंकवादियों के प्रति नरमी बरती, जिससे कश्मीर में दशकों तक हिंसा और विस्थापन हुआ। हजारों नागरिक शरणार्थी बने और उनकी जिंदगी कठिन हुई। इस दौरान अलगाववादी शक्तियों को बढ़ावा मिला और भारत विरोधी गतिविधियां फलने-फूलने लगीं। इसके विपरीत, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2014 के बाद जम्मू-कश्मीर से आतंकवाद और अलगाववाद को दफन कर देश की एकता को मजबूत किया। डॉ. मुखर्जी के संघर्ष और बलिदान के कारण ही जम्मू-कश्मीर आज भारत का अभिन्न हिस्सा है। भारतीय जनसंघ से भाजपा तक की राजनीति का मूल राष्ट्रवाद रहा है, जिसने देश की अखंडता और सुरक्षा को सर्वोपरि रखा।

शिक्षा के क्षेत्र में भी डॉ. मुखर्जी ने अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने उच्च शिक्षा को भारतीय संस्कृति से जोड़ने पर जोर दिया, ताकि देश की युवा पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों के साथ आधुनिक ज्ञान प्राप्त कर सके। आज नई शिक्षा नीति में भी उनके विचारों की परछाई मिलती है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार की कई जनकल्याणकारी योजनाएं प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, तीन तलाक विरोधी कानून, डॉ. मुखर्जी के सामाजिक दृष्टिकोण और राष्ट्रहित के विचारों का प्रतिफल हैं। ये योजनाएं देश के गरीब और पिछड़े तबकों को सशक्त बनाने का प्रयास करती हैं, जैसा कि डॉ. मुखर्जी ने सदैव समर्थन किया।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी भारत के महान राष्ट्वादी नेता थे, जिनका जीवन देशभक्ति और समर्पण की मिसाल है। वे पद, प्रतिष्ठा या स्वार्थ से ऊपर उठकर केवल देश की सेवा में लगे रहे। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा राष्ट्रवाद केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि सिद्धांतों और न्याय के लिए निरंतर संघर्ष है। आज जब भारत 2047 में स्वावलंबी और विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, तब उनकी शिक्षाएं और भी प्रासंगिक हो जाती हैं। डॉ. मुखर्जी का आदर्श और बलिदान हमारे लिए एक अमर प्रेरणा हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को एकजुट, मजबूत और आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

सुनो लड़कियों
तुम्हारी पलकों पर जो चुप्पियाँ हैं,
वे केवल मौन नहीं
वे पीढ़ियों की परछाइयां हैं
उन्हें किसी उजले मेले में
नीलाम कर आओ।

प्रेम को ओढ़ लो
जैसे भोर की पहली धूप
न शर्त, न अनुमति,
बस उतनी सहजता से प्रेम करो
जितनी सहज है सांस लेना।

हर उस नायिका को
नया नाम दो
जिसने 'ना' कहा या विद्रोह किया
और दुनिया ने उसे
बुरी औरत ठहरा दिया

देह का अधिकार
बाहर से नहीं, भीतर से आता है
यह देह
विवाह, कुल या वंश की जागीर नहीं
यह उस आत्मा की है
जो इसमें निवास करती है

अमलतास और गुलमोहर को
पाठशाला की दहलीज़ पर रोप दो
जहां बेटियां
न केवल झुकना
बल्कि उठना भी सीखें

इतिहास के पन्नों से
धूल झाड़ो
रज़िया सुल्तान को
केवल 'इकलौती महिला शासक' कहने की बजाय
उसे उस सिंहासन पर बैठाओ
जहां शासक केवल लिंग नहीं
बल बुद्धि से पहचाने जाते हैं

प्रेम की गणना मत करो
कि कितनों से किया
यह देखो
क्या कभी स्वयं से भी किया?

हर स्त्री के हृदय में
एक नन्ही-सी चिंगारी रख दो
जो समय आने पर
सिर्फ़ आग न बने
बल्कि पूरा दृश्य ही बदल दे

हाँ,
दुनिया इसे कहेगी
विद्रोह, उन्माद,
या कदमों का बहक जाना
पर तुम जान लो -
यह तुम्हारा सौंदर्यपूर्ण अधिकार है।

- अनुजीत इकबाल

यूएनएससी में भारत को मिल गया एक और देश का साथ

त्रिनिदाद और टोबैगो ने किया स्थायी सदस्यता का समर्थन

नई दिल्ली (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में भारत की स्थायी सदस्यता के लिए एक और देश ने समर्थन किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के बीच त्रिनिदाद एवं टोबैगो ने यह घोषणा की है। शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी समकक्ष कमला प्रसाद बिसेसर के बीच वार्ता के बाद बुनियादी ढांचे और औषधि समेत कई क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए छह समझौतों पर हस्ताक्षर भी किए। दोनों नेताओं ने कृषि, स्वास्थ्य सेवा और डिजिटल परिवर्तन, एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई), क्षमता निर्माण और लोगों के बीच संपर्क जैसे क्षेत्रों में संभावित सहयोग पर चर्चा की। शनिवार को जारी संयुक्त बयान में कहा गया कि त्रिनिदाद और टोबैगो ने विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत को अपना पूर्ण समर्थन देने की पुष्टि की है। वैश्विक मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श करते हुए मोदी और बिसेसर ने संयुक्त राष्ट्र में व्यापक सुधारों की आवश्यकता पर बल दिया, जिसमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का विस्तार भी शामिल है ताकि वर्तमान वास्तविकताओं को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित किया जा सके।

संयुक्त वक्तव्य में कहा गया, '' बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक संघर्षों को स्वीकार करते हुए दोनों नेताओं ने बातचीत और कूटनीति को आगे बढ़ने का रास्ता बताया।'' इस बात पर भी सहमति बनी कि भारत 2027-28 की अवधि के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अस्थायी सीट के लिए त्रिनिदाद और टोबैगो की उम्मीदवारी का समर्थन करेगा तथा यह द्वीपीय राष्ट्र 2028-29 की अवधि के लिए है।

कंपनी को कर्ज उतारने का हक, हमने वही किया

● नेशनल हेराल्ड केस की सुनवाई में बोलीं सोनिया गांधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेशनल हेराल्ड केस में कांग्रेस नेता सोनिया गांधी के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कोर्ट में दलील दी कि एजेएल (एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड) का कर्ज चुकाना एक वैध कारोबारी फैसला था। हर कंपनी को कानूनन अपना कर्ज उतारने का अधिकार है और हमने भी वही किया। एजेएल की संपत्ति अभी भी हमारे पास है और कोई ट्रांसफर नहीं हुआ है। सिंघवी के मुताबिक,एजेएल के 90 करोड़ रुपए के कर्ज को यंग इंडियन नाम की गैर-लाभकारी कंपनी ने लिया, ताकि एजेएल कर्ज मुक्त हो सके। यह मामला मनी लॉन्ड्रिंग का नहीं बनता, क्योंकि इसमें न कोई लेन-देन है, न धन का दुरुपयोग और न ही लाभ का वितरण। सिंघवी ने पूछा कि अगर एजेएल का कर्ज टाटा या बिरला जैसे औद्योगिक घरानों ने ले लिया गया होता, तो क्या उन पर मनी लॉन्ड्रिंग का आरोप लगाया जाता। मामले की जांच के लिए किसी अधिकृत व्यक्ति ने कोई शिकायत दर्ज नहीं की है और सुब्रमण्यम स्वामी इस मामले में अधिकृत नहीं हैं।

अब बीहड़ की बिजली से जगमगायेंगे मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश

ग्वालियर-चंबल क्षेत्र बनेगा विकास का नया केंद्र : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारी सरकार प्रदेश के समग्र विकास के लिए संकल्पित है। हम सबके जीवन में उजाला लाने के लिए कटिबद्ध हैं। ग्वालियर-चंबल क्षेत्र शीघ्र ही राज्य का सबसे विकसित क्षेत्र बनेगा। मुख्यमंत्री ने क्षेत्रीय किसानों से अपील की कि वे अपनी जमीन बेचने की कतई न सोंचे, क्योंकि इस क्षेत्र में शीघ्र ही रोजगार के नए अवसर और विकास की नई धाराएं बहने वाली हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को ग्वालियर के आईएसबीटी परिसर में विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमिपूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां 265.56 करोड़ रुपये की लागत के विभिन्न विकास कार्यों का रिमोट का बटन दबाकर लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। उन्होंने विभिन्न शासकीय योजनाओं के अंतर्गत पात्र हितग्राहियों को मंच से हितलाभ भी वितरित किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में नदियों को जोड़ने का अभियान चल रहा है। केंद्र सरकार की मदद से यहां पार्वती, कालीसिंध और चंबल नदियों को आपस में जोड़ने की राष्ट्रीय नदी लिंक परियोजना पर करीब 70 हजार करोड़ रुपये की लागत से काम किया जा रहा है। साथ ही केन-बेतवा राष्ट्रीय नदी लिंक परियोजना से भी ग्वालियर-चंबल क्षेत्र के किसानों को व्यापक स्तर पर लाभ मिलने वाला है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस क्षेत्र के बीहड़ों को अब बेहतर तरीके से विकसित किया जा रहा है। यहां के बीहड़ों में जल्द ही केंद्र सरकार के सहयोग से 2000 मेगावाट क्षमता का एक बड़ा सोलर पॉवर प्लांट स्थापित किया जा रहा है। यह मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की संयुक्त परियोजना होगी। इस परियोजना से दोनों ही प्रदेशों को ऊर्जा आपूर्ति होगी। मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश 6-6 माह बराबरी से इस परियोजना से उत्पादित बिजली का उपभोग करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि आगरा से ग्वालियर के बीच बन रहे नये सिक्स-लेन नेशनल हाई-वे के चलते बड़े-बड़े उद्योगपतियों ने इस क्षेत्र में बड़ा निवेश करने में अपनी रुचि दिखाई है। इससे यहां तेजी से औद्योगिक विकास होगा और इस क्षेत्र का कायाकल्प भी सुनिश्चित होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्वालियर के गौरवशाली अतीत का स्मरण करते हुए कहा कि यह भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की जन्मभूमि और राजमाता विजयाराजे सिंधिया की कर्मभूमि रही है। प्रदेश की धरती से भारत के विकास का दीपक अटलजी के रूप में प्रज्ज्वलित हुआ था। भारत मानवता के लिए जीता है। ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना ने तीन-तीन देशों से लड़ाई लड़ी। सर्जिकल स्टाइक में पाकिस्तान को माकूल जवाब देने के लिए हमारे सुखोई विमान ग्वालियर से ही उड़े। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य के स्वर्णिम भविष्य के निर्माण के लिए सरकार ने शुक्रवार को ही 94 हजार से अधिक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को लैपटॉप खरीदने के लिए राशि दी है।

अब सभी वक्फ संपत्ति का होगा ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन

90 दिन का मिलेगा समय,केन्द्र ने किए नए नियम अधिसूचित

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने यूनिफाइड वक्फ मैनेजमेंट, एम्पावरमेंट, एफिशिएंसी एंड डेवलपमेंट रूल्स, 2025 का नोटिफिकेशन जारी किया है। ये नियम वक्फ संपत्तियों के पोर्टल और डेटाबेस, उनके पंजीकरण, ऑडिट और खातों के रखरखाव से जुड़े हैं। नए नियमों के तहत एक केंद्रीकृत पोर्टल और डेटाबेस बनाया गया है, जिसमें देशभर की वक्फ की पूरा रिकॉर्ड दर्ज होगा। इसमें वक्फ संपत्तियों की सूची अपलोड करना, नया पंजीकरण, वक्फ रजिस्टर का रखरखाव, खातों की जानकारी देना, ऑडिट रिपोर्ट प्रकाशित करना और बोर्ड के आदेशों को दर्ज करना शामिल है। वक्फ संपत्ति का प्रबंधक (मुतवल्ली) अपने मोबाइल नंबर और ईमेल के जरिए लॉगिन करके पोर्टल पर रजिस्टर करेगा।

इसके बाद वक्फ और उसकी संपत्ति का विवरण अपलोड कर सकेगा। नई वक्फ संपत्ति को बनने के तीन महीने के अंदर पोर्टल पर फॉर्म 4 में पंजीकरण कराना होगा। वक्फ बोर्ड पोर्टल पर फॉर्म 5 में वक्फ का रजिस्टर बनाए रखेगा। नए नियम वक्फ (संशोधन) अधिनियम 2025 के तहत बनाए गए हैं, जो 8 अप्रैल 2025 से लागू हुआ है। नए नियमों में सरकारों की जिम्मेदारी तय केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय में वक्फ डिवीजन के प्रभारी संयुक्त सचिव इस पोर्टल और डेटाबेस की निगरानी और नियंत्रण करेंगे। राज्य को संयुक्त सचिव स्तर का नोडल अधिकारी नियुक्त करना होगा। केंद्र की सलाह से सेंट्रलाइज्ड सपोर्ट यूनिट बनेगी। पोर्टल में रियल-टाइम मॉनीटरिंग की सुविधा होगी। जिससे पंजीकरण, संपत्तियों की जानकारी, गवर्नेंस, कोर्ट केस, विवाद निपटारा, वित्तीय निगरानी और संसाधनों के प्रबंधन जैसे कार्य हो सकेंगे। साथ ही, सर्वे और विकास से जुड़ी जानकारियां भी इसमें शामिल होंगी। राज्य सरकार 90 दिनों के अंदर वक्फ की सूची और विवरण पोर्टल पर अपलोड करेगी। देरी होने पर 90 दिन का अतिरिक्त समय मिलेगा, लेकिन देरी का कारण बताना होगा। वक्फ संशोधन बिल (अब कानून) 2 अप्रैल को लोकसभा और 3 अप्रैल को राज्यसभा में 12-12 घंटे की चर्चा के बाद पास हुआ था। इसके बाद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बिल को 5 अप्रैल की देर रात मंजूरी दी थी। सरकार ने वक्फ संशोधन कानून को 8 अप्रैल से देशभर में लागू कर दिया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 32 °c

न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 06 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

ड्रोन बनाने के मामले में आत्मनिर्भर बनेगा भारत

● चीन और तुर्किये पर आश्रित पाकिस्तान को चटाएगा धूल

नई दिल्ली (एजेंसी)। ड्रोन के आयातित कलपुर्जों पर निर्भरता कम करने और चीन व तुर्किये की मदद पर आश्रित पाकिस्तान के ड्रोन कार्यक्रम का मुकाबला करने के लिए भारत नागरिक और सैन्य ड्रोन निर्माताओं के लिए 20 अरब रुपये (23.4 करोड़ डॉलर) का प्रोत्साहन कार्यक्रम शुरू करेगा। मई में पाकिस्तान के साथ चार दिवसीय संघर्ष के बाद भारत अधिक-अधिक स्वदेशी ड्रोन बनाने का प्रयास कर रहा है। इस संघर्ष के दौरान दोनों देशों ने एक-दूसरे के विरुद्ध बड़े पैमाने पर ड्रोन का इस्तेमाल किया था। अब दोनों देश ड्रोन हथियारों की दौड़ में उलझे हुए हैं। दो सरकारी और एक उद्योग के सूत्र ने बताया कि भारत तीन वर्ष के लिए 20 अरब रुपये का कार्यक्रम शुरू करेगा, जिसमें ड्रोन के साथ-साथ उसके कलपुर्जों,

साफ्टवेयर और काउंटर ड्रोन सिस्टम का निर्माण शामिल होगा। भारत का नागरिक उड्डयन मंत्रालय इस प्रोत्साहन कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहा है। अतीत में भारत ने मुख्य रूप से अपने तीसरे सबसे बड़े हथियार आपूर्तिकर्ता इजरायल से सैन्य ड्रोन आयात किए हैं। लेकिन हाल के वर्षों में भारत के ड्रोन उद्योग ने अपने किफायती उत्पादन को बढ़ाया है जिनमें सैन्य ड्रोन शामिल हैं। हालांकि मोटर्स, सेंसर्स और इमेजिंग सिस्टम जैसे कुछ कलपुर्जों के लिए चीन पर निर्भरता जारी है। दो सरकारी सूत्रों ने बताया कि प्रोत्साहनों के जरिये भारत का लक्ष्य वित्तीय वर्ष 2028 (अप्रैल-मार्च) के अंत तक देश में ड्रोन के कम से कम 40 प्रतिशत प्रमुख कलपुर्जों को बनाना है। रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह ने पिछले सप्ताह कहा था, (भारत-पाकिस्तान) संघर्ष के दौरान दोनों पक्षों की ओर से ड्रोन, लोटरिंग म्यूनिशन और कामिकेज ड्रोन का काफी उपयोग किया गया था। हमने जो सबक सीखा है, वह यह है कि हमें अपने स्वदेशीकरण प्रयासों को दोगुना करने की आवश्यकता है ताकि हम एक बड़ा और प्रभावी सैन्य ड्रोन निर्माण पारिस्थितिकी तंत्र बना सकें। सरकारी सूत्रों ने कहा कि भारत ड्रोन आयात पर प्रतिबंध लगाता है, लेकिन उनके कलपुर्जों पर नहीं और सरकार ने स्वदेशी कलपुर्जों की खरीद के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन की योजना बनाई है। अनुमानों के अनुसार, अभी भारत में 600 से अधिक ड्रोन विनिर्माण और संबद्ध कंपनियां हैं।

सीबीआई ने कर दिया एक बड़े राज का पर्दाफाश

मेडिकल एजुकेशन घोटाले का खुल गया है 'पिटारा'

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीबीआई ने एक बड़े मेडिकल एजुकेशन घोटाले का पर्दाफाश किया है। इस घोटाले में स्वास्थ्य मंत्रालय के कई बड़े अधिकारियों, यूजीसी के पूर्व चेयरमैन, धर्मगुरु के अलावा कई नाम

शामिल हैं। सीबीआई की एफआईआर में कुल 34 लोगों के नाम शामिल किए गए हैं। इनमें से आठ स्वास्थ्य मंत्रालय, एक नेशनल हेल्थ अथॉरिटी, पांच डॉक्टर और एक स्वयंभू संत शामिल हैं। सीबीआई की एफआईआर के मुताबिक यूजीसी के पूर्व चेयरमैन डीपी सिंह का नाम भी भी इस घोटाले में शामिल है। फिलहाल वर टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज के चांसलर हैं। दूसरा नाम रावतपुरा इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च के चेयरमैन और स्वयंभू संत रविशंकर महाराज का है। इन्हें रावतपुरा सरकार के नाम से भी जाना जाता है। इसके अलावा इंडेक्स मेडिकल कॉलेज इंदौर के चेयरमैन सुरेश सिंह भदौरिया के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज की गई है। गीतांजलि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार मयूर सरकार का नाम भी इस स्कैम से जुड़ा है। सीबीआई ने अब तक इस मामले में कुल आठ लोगों को गिरफ्तार किया है। तीन डॉक्टरों पर 55 लाख रुपये घूस लेकर मनमानी जांच रिपोर्ट लगाने का आरोप है। एफआईआर के मुताबिक रवि शंकर महाराज ने जांच को लेकर एडवांस जानकारी लेने की कोशिश की।

स्वास्थ्य मंत्रालय से ही लीक हो गईं फाइल

जानकारी के मुताबिक यह घोटाला स्वास्थ्य मंत्रालय से ही शुरू हुआ था। बताया गया कि आठ अधिकारियों ने दलालों को गुप्त फाइलों की भी जानकारी दे दी। लंबी चौड़ी रिश्वत लेने के बाद कॉलेज के प्रतिनिधियों को सीक्रेट इन्फॉर्मेशन दे दी गई। अधिकारियों ने फाइल की फोटो खींचकर बिचौलियों को भेजी थी। सीबीआई ने इन अधिकारियों की पहचान पूनम मीना, धर्मवीर, पियूष मल्यान, अनूप जैसवाल, राहुल श्रीवास्तव, दीपक, मनीषा और चंदन कुमार के तौर पर की है। इस तरह की जानकारी मिलने से कॉलेज जांच से पहले ही तैयार हो गए । कॉलेजों में फर्जी फैकल्टी, फर्जी मरीजों का इंतजाम किया गया। इसके अलावा बायोमीट्रिक सिस्टम में भी बदलाव कर दिया गया। इस मामले में आरोपी इंडेक्स मेडिकल कॉलेज के सुरेश सिंह भदौरिया पर आरोप हैकि वह डॉक्टरों की बायोमीट्रिक अटेंडेंस बनाने के लिए आर्टिफिशियल फिंगर का इस्तेमाल करते थे।

नीरव मोदी का भाई निहाल अमेरिका में गिरफ्तार

● पीएनबी घोटाले में शुरू हो गई भारत लाने की तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएनबी घोटाले के आरोपी भगोड़े कारोबारी नीरव मोदी के छोटे भाई निहाल को अमेरिका में गिरफ्तार कर लिया गया है। अमेरिकी प्रशासन की तरफ से ही भारत को यह जानकारी दी गई है। प्रवर्तन निदेशालय और सीबीआई ने अमेरिका से

निहाल के प्रत्यर्पण की अपील की थी। अमेरिका ने बताया कि निहाल मोदी को शुक्रवार को हिरासत में लिया गया है। 17 जुलाई को मामले की सुनवाई कोर्ट में होनी है जिसमें वह जमानत की मांग कर सकता है। हालांकि सरकारी वकील उसकी जमानत का विरोध करेंगे। अमेरिकी अभियोजकों द्वारा प्रत्यर्पण की कार्यवाही दो आरोपों पर की गई, जिसमें धन शोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए), 2002 की धारा 3 के तहत धन शोधन का एक मामला और दूसरा भारतीय दंड संहिता की धारा 120-बी (आपराधिक साजिश) व 201 (फरार होने) के तहत आपराधिक साजिश का मामला शामिल है। निहाल (46 साल) पंजाब नेशनल बैंक से जुड़े कथित 13,000 करोड़ रुपये के धोखाधड़ी मामले में आरोपी है। यह मामला अब तक के सबसे बड़े धोखाधड़ी मामलों में से एक है। धोखाधड़ी का आरोप दोनों भाइयों (नीरव और निहाल मोदी) और उनके रिश्तेदार मेहुल चोकसी पर है।

● कीमत 70 हजार रुपए प्रति किलो,जापानी प्रजाति का ● दावा-इसे खाने से कैंसर की ग्रोथ तक रुकती है

हरियाणा पहुंचा दुनिया का सबसे महंगा आम

कुरुक्षेत्र (एजेंसी)। हरियाणा के कुरुक्षेत्र में शुरू हुए फ्रूट फेस्टिवल में इस बार जापान का मियाजाकी आम सबसे ज्यादा चर्चा में है। इसे दुनिया का सबसे महंगा आम माना जाता है। भारत में इसकी कीमत 50 हजार से 70 हजार प्रति किलो है, जबकि जापान और दुबई जैसे देशों में यही आम 2.50 लाख से 3 लाख किलो तक बिकता है। गहरे लाल रंग और मीठे रस से भरे इस मियाजाकी आम को 'एग ऑफ द सन' के नाम से भी जाना जाता है। एक रिसर्च के मुताबिक यह आम सिर्फ एक फल नहीं बल्कि कैंसर रोगियों के लिए दवा भी है, क्योंकि रिसर्च में दावा किया गया है कि ये आम शरीर में कैंसर सेल्स की ग्रोथ को रोक सकता है। साथ ही यह शरीर की ताकत यानी इम्यूनिटी बढ़ाने में भी मदद करता है। मियाजाकी कि इन्हीं कुछ खासियतों के कारण लाडवा में स्थित इंडो-इजराइल सब-ट्रॉपिकल सेंटर में इसका एक पौधा भी लगाया गया है। सेंटर ने इसे भविष्य का फल मानते हुए रिसर्च शुरू कर दी है। अच्छी बात यह है कि पौधे पर इस साल फल भी आ चुके हैं। लाडवा के इंडो इजराइल सब ट्रॉपिकल सेंटर में चल रहे फ्रूट फेस्टीवल में यूपी के मुजफ्फरनगर के किसान मोहम्मद साजिद इस आम को लेकर पहुंचे हैं।

सेहत का सुपर फ्रूट जापान का मियाजाकी

जिला उद्यान अधिकारी डॉक्टर शिवेंद्र प्रताप ने बताया कि ये आम स्वाद का खजाना ही नहीं, बल्कि सेहत का भी सुपर फरूट है। मियाजाकी आम एंटीऑक्सीडेंट, बीटा-कैरोटीन और फोलिक एसिड से भरपूर है। इसे कैंसर की कोशिकाओं की ग्रोथ रोकने में असरदार माना गया है। साथ ही यह इम्यूनिटी बूस्ट करने वाला फल भी है। इसलिए मियाजाकी आम विदेशों में करीब 3 लाख रुपए प्रति किलो बिकता है। इसका स्वाद उत्तर भारत के लोकप्रिय रटौल आम जैसा ही लगता है। रटौल यूपी के बागपत का कस्बा है, जहां के फेमस आम को रटौल के नाम से ही जाना जाता है।

ऑस्ट्रेलिया, दुबई और इंग्लैंड में काफी डिमांड

इस आम की ऑस्ट्रेलिया, दुबई और इंग्लैंड जैसे देशों में काफी डिमांड है। अब इसकी बागवानी यूपी के साथ-साथ पंजाब और हरियाणा में भी की जा रही है। भारत से इसको विदेशों में एक्सपोर्ट भी किया जा रहा है। इसके

कॉलेजियम में होगी पूरी पारदर्शिता, मेरिट से समझौता नहीं

● न्यायालयों में जजों की नियुक्ति पर बोले सीजेआई गवई

मुंबई (एजेंसी)। भारत के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस बी आर गवई ने गुरुवार को न्यायालयों में जजों की नियुक्ति की प्रक्रिया को लेकर कुछ अहम टिप्पणियां की हैं। सीजेआई गवई ने इस दौरान कॉलेजियम प्रणाली में पूर्ण पारदर्शिता लाने का आश्वासन

देते हुए कहा है कि इस प्रक्रिया के दौरान योग्यता को लेकर कभी समझौता नहीं किया जाएगा। बता दें कि पिछले महीने देश के 52वें प्रधान न्यायाधीश के रूप में शपथ लेने वाले जस्टिस गवई देश के सर्वोच्च न्यायिक पद पर उनकी पदोन्नति के सम्मान में मुंबई बार एसोसिएशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में पहुंचे थे।

साथ आए हैं और अब साथ ही रहेंगे

● राज ठाकरे को लेकर भाई उद्धव ठाकरे ने कर दिया बड़ा ऐलान

मुंबई (एजेंसी)। उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे ने शनिवार को मुंबई में बड़ी रैली की। इस दौरान मराठी भाषा को लेकर दोनों भाइयों ने एक सुर में अपनी बात रखी। इसके साथ ही दोनों ने एक अहम ऐलान भी कर डाला। उद्धव ठाकरे ने मंच से कहाकि दोनों साथ आए हैं तो साथ ही रहेंगे। वहीं, मनसे चीफ राज ठाकरे ने कहाकि दोनों भाइयों को साथ खड़ा करके देवेंद्र फडणवीस ने वह कर दिखाया, जो बालासाहेब ठाकरे भी नहीं कर पाए। इस तरह महाराष्ट्र की

राज बोले-बाल ठाकरे जो ना कर सके,वह फडणवीस ने कर दिया

सियासत में बड़ा बदलाव आता नजर आ रहा है। अगर राज ठाकरे की मनसे और उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) का यह साथ चुनाव अभियान में भी बना रहा तो भाजपा के लिए खासी मुश्किल खड़ी हो सकती है। उद्धव ने उन्होंने यह भी कहा कि वह और राज मिलकर मुंबई नगर निगम और महाराष्ट्र की सत्ता पर कब्जा करेंगे। दो दशकों के बाद उद्धव

और राज ने सार्वजनिक मंच साझा किया और 'आवाज मराठीचा' नामक एक विजय सभा आयोजित की जो राज्य के स्कूलों में कक्षा एक से तीसरी भाषा के रूप में हिंदी को शामिल करने के लिए सरकार द्वारा पहले जारी किए गए दो सरकारी आदेशों को वापस लेने का जश्न मनाने के लिए की गई। इस रैली में दोनों भाइयों ने भाजपा और एकनाथ शिंदे वाली शिवसेना पर जमकर गुस्सा उतारा। उद्धव ठाकरे ने तो यहां तक कह डाला कि अगर मराठी के लिए हमें गुंडा कहा जाता है तो हम गुंडे हैं। करीब 20 साल बाद राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे के मिलन को लेकर महाराष्ट्र में सियासी माहौल भी खासा गर्म हो गया है। मराठी अस्मिता के बहाने जुटे दोनों दिग्गजों ने अगर चुनावी तालमेल भी बनाया तो यह भाजपा और उसके सहयोगी दलों को मुश्किल में डालेगा। गौरतलब है कि महाराष्ट्र में निकाय चुनाव होने वाले हैं।

एसवायएल विवाद पर पंजाब-हरियाणा बातचीत को तैयार

● दिल्ली में 9 को मीटिंग,सीएम सैनी और मान रहेंगे मौजूद

चंडीगढ़ (एजेंसी)। सतलुज यमुना लिंक नहर (एसवायएल) पर वार्ता के लिए फिर से पंजाब और हरियाणा तैयार हो गए हैं। केंद्र सरकार के न्योते के बाद दिल्ली में नहर के निर्माण के मुद्दे पर पंजाब-हरियाणा के मुख्यमंत्रियों के बीच मीटिंग होगी। केंद्र सरकार की अगुआई में वार्ता 9 जुलाई को दिल्ली में होगी। इसमें हरियाणा सीएम नायब

सिंह सैनी, पंजाब सीएम भगवंत मान और केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल मौजूद रहेंगे। पंजाब और हरियाणा इस मीटिंग में मजबूती से अपना-अपना पक्ष रखने की तैयारी कर रहे हैं। दोनों सीएम ने अधिकारियों को संबंधित डॉक्यूमेंट और अब तक हुई मीटिंगों का ब्योरा तैयार करने के निर्देश दिए हैं। सतलुज-यमुना लिंक नहर के निर्माण में देरी को लेकर सीएम सैनी कह चुके हैं,सुप्रीम कोर्ट द्वारा हरियाणा के पक्ष में स्पष्ट आदेश दिए जाने के बावजूद पंजाब की भगवंत मान सरकार सहयोग की बजाय टकराव की राह पर है।

अब इंडियन नेवी में हो गई है नए युग की शुरुआत

● नौसेना की पहली महिला फाइटर पायलट बनीं आस्था पूनिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। सब-लेफ्टिनेंट आस्था पूनिया नौसेना विमानन की लड़ाकू शाखा में शामिल होने वाली पहली महिला बन गई हैं, जिससे बल में महिला लड़ाकू पायलट के एक नए युग का रास्ता साफ हुआ। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पूनिया अब लड़ाकू पायलट के रूप में योग्यता प्राप्त करने के लिए ट्रेनिंग लेंगी। भारतीय नौसेना ने विशाखापत्तनम के आईएनएस डेगा में दूसरे बेसिक हॉक कन्वर्जन कोर्स के समापन का जश्न मनाया। रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि 3 जुलाई को विंगिंग समारोह आयोजित हुआ। इसमें सहायक नौसेनाध्यक्ष (वायु) रियर एडमिरल जनक बेवली ने लेफ्टिनेंट अतुल कुमार ढल और सब लेफ्टिनेंट पूनिया को विंग्स ऑफ गोल्ड प्रदान किया। बयान के मुताबिक, सब ल-फ्टिनेंट आस्था पूनिया सभी बाधाओं को तोड़ते हुए और नौसेना में महिला लड़ाकू पायलट के एक नए युग का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

पीयूष चाहे जितनी छाती पीट लें मोदी ट्रंप के आगे झुक जाएंगे

आगामी भारत-अमरीका ट्रेड डील पर राहुल गांधी का तीखा हमला

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद व लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने अमेरिका के साथ चल रही भारत की व्यापार वार्ता को लेकर पीएम मोदी पर तीखा हमला बोला है। राहुल

गांधी ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर करते हुए केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि पीयूष गोयल जितना चाहें अपनी छाती पीट लें, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ डेडलाइन के आगे झुक जाएंगे। राहुल गांधी केंद्रीय मंत्री के एक बयान पर प्रतिक्रिया दे रहे थे। दरअसल हाल ही में एक इंटरव्यू में केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा निर्धारित 9 जुलाई की समय सीमा को खारिज करते हुए कहा कि भारत व्यापार समझौतों पर कभी भी समय के दबाव में काम नहीं करता। गोयल ने कहा,भारत ने कभी भी किसी व्यापार समझौते या उसके किसी हिस्से पर समय की कोई बाध्यता या दबाव में चर्चा नहीं की है। हमें अपने राष्ट्रीय हितों का ध्यान रखना है और यह सुनिश्चित करना है कि यह एक निष्पक्ष समझौता हो, जिससे हमें अपने प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले सतत लाभ मिले। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए राहुल गांधी ने लिखा,पीयूष गोयल चाहे जितनी छाती पीट लें, मेरी बात पर ध्यान दीजिए, मोदी ट्रंप की टैरिफ समयसीमा के आगे झुक जाएंगे। गौरतलब है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने करीब 100 देशों पर जवाबी टैरिफ लगाए थे, जिनमें भारत पर भी 26 फीसदी का टैरिफ लगाया गया। हालांकि इसके बाद अमेरिका ने 90 दिनों के लिए इन टैरिफ पर रोक लगाई थी, जो अब मंगलवार को समाप्त हो रही है।

तमिलनाडु में एआईएडीएमके ही रहेगा भाजपा का बड़ा भाई

● पलानीस्वामी बोले-भाजपा से चुनावी समझौता, सरकार में गठबंधन नहीं

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री ई पलानीस्वामी ने शनिवार को साफ कर दिया कि तमिलनाडु में भाजपा के साथ

गठबंधन में एआईएडीएमके ही बड़ा भाई है। उन्होंने कहा कि कोई भी पार्टी चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो हम पर हावी नहीं हो सकती। एआईएडीएमके तमिलनाडु में 30 साल से ज्यादा समय तक सत्ता में रही है। अगर गठबंधन 2026 के विधानसभा चुनाव जीतता है तो तमिलनाडु में कोई गठबंधन सरकार नहीं होगी और यह समझौता केवल चुनाव के लिए है। एआईएडीएमके सुप्रीमो का बयान ऐसे समय आया है जब पार्टी नेता गठबंधन में भाजपा के हावी होने को लेकर आशंकित थे। हालांकि, इससे पहले भी पलानीस्वामी इस तरह की अटकलों को खारिज कर चुके हैं। अभिनेता विजय की पार्टी के लिए दरवाजे खुले पलानीस्वामी ने घोषणा की कि एआईएडीएमके 7 जुलाई को कोयंबटूर से चुनावी अभियान शुरू करेगी। भाजपा का नाम लिए बगैर उन्होंने कहा कि सभी गठबंधन सहयोगियों को आमंत्रित किया गया है। यह पूछे जाने पर कि क्या अभिनेता विजय की पार्टी बीजेपी को आमंत्रित किया जाएगा, पलानीस्वामी ने कहा, जो लोग डीएमके को हटाना चाहते हैं,सबका स्वागत है।

पौधरोपण में वैज्ञानिक और टिकाऊ तकनीकों के उपयोग के लिए प्रशिक्षण

मनरेगा के तहत इंजीनियर और कृषि सखियों को दिया जा रहा है तकनीकी प्रशिक्षण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की गई 'एक बगिया मां के नाम परियोजना', 'गंगोत्री हरित योजना' और 'नर्मदा परिक्रमा पथ' जैसी योजनाओं को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने की दिशा में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने व्यापक तैयारियां शुरू कर दी हैं। इन योजनाओं के तहत मनरेगा के माध्यम से प्रदेश में बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

इन कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रदेश के 2101 इंजीनियर और 626 कृषि सखी को तकनीकी रूप से प्रशिक्षित किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण मध्यप्रदेश जल-भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल और क्षेत्रीय ग्रामीण विकास-पंचायतराज प्रशिक्षण केंद्रों में संचालित किया जा रहा है। प्रशिक्षण का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि पौधरोपण कार्य वैज्ञानिक और टिकाऊ तरीके से किया जाए।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल ने निर्देश दिए हैं कि नदियों के उद्गम स्थलों पर पौधरोपण को प्राथमिकता दी जाए। साथ ही मां नर्मदा परिक्रमा पथ पर आश्रय स्थलों में पौधरोपण कर तीर्थ यात्रियों को बेहतर सुविधाएं दी जाएं। उन्होंने 'एक बगिया मां के नाम परियोजना' को महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का एक सशक्त

माध्यम बताया। मनरेगा के अंतर्गत प्रशिक्षण पाने वाले अधिकारियों में 36 कार्यपालन यंत्री आरईएस, 215 सहायक यंत्री, 47 डीपीएम एसआरएलएम और 1803 उप यंत्री शामिल हैं। इन्हें पौधरोपण की तकनीकी बारीकियों से अवगत कराया जा रहा है, जिससे वे इस कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न कर सकें। प्रदेश में पहली बार पौधरोपण कार्य में अत्याधुनिक तकनीक सिपरी सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जा रहा है। इस सॉफ्टवेयर की मदद से संबंधित जिलों की जलवायु, मिट्टी की गुणवत्ता, एग्रो क्लाइमेट ज़ोन, स्थल चयन और पानी की उपलब्धता जैसी जानकारियां जुटाकर पौधों की उपयुक्त प्रजातियों का चयन किया जाएगा। जहां सॉफ्टवेयर उपयुक्तता नहीं दिखाता, वहां पौधरोपण नहीं किया जाएगा, जिससे संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित हो सके।

'एक बगिया मां के नाम' अभियान के तहत स्व-सहायता समूह की महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए उनकी निजी भूमि पर फलदार पौधे लगाए जाएंगे। इसके लिए 626 कृषि सखी को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ये कृषि सखी बाद में अन्य स्व-सहायता समूहों की महिलाओं को पौधारोपण की तकनीक, पौधों के चयन और देखरेख के बारे में प्रशिक्षण देंगी और उन्हें आवश्यक सहयोग प्रदान करेंगी। इस व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से प्रदेश में न केवल पर्यावरण-संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि ग्रामीण महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्राप्त होगा।

राष्ट्रध्वज जलाने का विरोध

निगम ऑफिस में पहुंचे लोग, बोले- कार्रवाई हो; पुलिस से भी शिकायत

भोपाल (नप्र)। भोपाल के वार्ड-50 स्थित 12 नंबर बस स्टॉप में निगम के वार्ड ऑफिस के पास राष्ट्रध्वज जलाने को लेकर शनिवार को कई लोगों ने विरोध कर दिया। उन्होंने निगम ऑफिस में पहुंचकर हंगामा किया। वहीं, पुलिस से भी शिकायत की। कांग्रेस के ब्लॉक अध्यक्ष निक्की चौबे ने बताया कि वार्ड-50 के निगम ऑफिस के बाहर झंडे जलाए जा रहे थे। इस पर एक युवक ने ऐसा करने से रोका। इस मामले में शाहपुरा थाने में आवेदन दिया है। राष्ट्रध्वज जलाना राष्ट्र द्रोह की श्रेणी में आता है। इस मामले में कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। विरोध कर रहे दीपक जाधव ने बताया कि वार्ड कार्यालय के बाहर निगमकर्मी ही प्लास्टिक के करीब 50 ध्वज जला रहे थे। जिन्हें पकड़ लिया। पिछले चार दिन से वे ऐसा कर रहे हैं। इसके विरोध में निगम ऑफिस भी पहुंचे। वहीं, थाने में भी शिकायत की है। ताकि, दोषियों पर कार्रवाई हो सके। हालांकि, अफसरों ने निगमकर्मी के होने की बात से इनकार किया है।

कांग्रेस ने भी विरोध जताया

इस मामले में कांग्रेस ने भी विरोध जताया है। पूर्व मंत्री पीसी शर्मा ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करके दोषियों पर कार्रवाई करने की मांग की। कांग्रेस नेता अमित शर्मा ने भी आपत्ति जताई है। इस मामले में उन्होंने भी सोशल मीडिया पर पोस्ट भी डाली है।

जलते ध्वज को आग से निकालते दिखा युवक: इस मामले में दो वीडियो शनिवार को सोशल मीडिया पर वायरल हुए। इनमें कुछ लोग आग में ध्वज जलाते हुए नजर आ रहे थे। जिसे एक युवक ने रोक लिया। वहीं, आग की लपटों से ध्वज निकाले। इसके बाद ही वे निगम ऑफिस और थाने पर शिकायत लेकर पहुंचे।

2 अवैध कॉलोनियों पर बड़ी कार्रवाई

एसडीएम के सामने तोड़ी पक्की सड़क- बाउंड्रीवॉल; 14 करोड़ जमीन की कीमत

भोपाल (नप्र)। भोपाल के खेजड़ा बरामद में विकसित हो रही 2 अवैध कॉलोनियों पर शनिवार को जिला प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई की। गोविंदपुरा एसडीएम रवीश कुमार श्रीवास्तव की मौजूदगी में अमले ने पक्की सड़क और बाउंड्रीवॉल तोड़ दी। जमीन की सरकारी कीमत 12 करोड़ रुपए से ज्यादा है। वहीं, 2 करोड़ रुपए कीमत की सरकारी जमीन से भी अवैध कब्जा हटाया गया।

एसडीएम श्रीवास्तव ने बताया, ग्राम खेजड़ा बरामद में 3.46 शासकीय भूमि में से 0.40 एकड़ भूमि पर पक्का रोड व बाउंड्रीवॉल बनाकर अतिक्रमण कर लिया गया था। यहां कार्रवाई करते हुए अवैध कब्जा हटाया गया। जमीन की कीमत 2 करोड़ रुपए है।

इस शासकीय भूमि से लगी 2.81 एकड़ निजी भूमि पर बिना सक्षम अनुमति के राहुल पाल एवं रोहित मीणा अवैध तरीके से कॉलोनी विकसित कर रहे थे। छोटे-छोटे प्लॉट काटकर वे श्री

श्याम सिटी नाम से अवैध कॉलोनी विकसित कर रहे थे। यहां कार्रवाई करते हुए पक्की सड़क और बाउंड्रीवॉल को तोड़ दिया गया। इस जमीन की कीमत 10.50 करोड़ रुपए है।अवैध तरीके से विकसित की जा रही कॉलोनियों में पक्की सड़कें बना दी गई थी और प्लॉटिंग भी की गई थी।

मुस्कान सिटी पर भी कार्रवाई: एसडीएम श्रीवास्तव के अनुसार, खेजड़ा बरामद में ही खसरा क्रमांक 279/3/1 के अंश भाग रकबा 1 एकड़ निजी भूमि पर बिना अनुमति के मुस्कान सिटी नाम से अवैध कॉलोनी विकसित की जा रही थी। सचिन ठाकुर ने छोटे-छोटे प्लॉट काट दिए थे। यहां भी सड़क और प्लॉट मार्किंग तोड़ी की गई। इस जमीन का शासकीय मूल्य 2 करोड़ 56 लाख रुपए है।

मंदसौर में करणी सेना पर पुलिस ने चलाया वाटर कैनन

राष्ट्रीय अध्यक्ष जीवन सिंह ने कहा- एफआईआर से नाम हटाओ, वरना हटेंगे नहीं

मंदसौर (नप्र)। राजपूत समाज के संगठन करणी सेना परिवार के राष्ट्रीय अध्यक्ष जीवन सिंह शेरपुर पर मंदसौर जिले के भावगढ़ में एफआईआर दर्ज हुई है। इसके विरोध में शनिवार को वे अपने हजारों समर्थकों के साथ मंदसौर एसपी कार्यालय का घेराव करने पहुंचे। समर्थक जमकर नारेबाजी कर रहे हैं। वह एफआईआर वापस लेने और पुलिसकर्मियों को निलंबित करने की मांग को लेकर अनशन पर बैठे हैं। बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स तैनात किया गया है। एसपी अभिषेक आनंद कार्यालय पहुंचे। पुलिस ने करणी सेना से कहा कि कानून का पालन करना हमारी जवाबदारी है।

कोर्ट ने आपके खिलाफ गिरफ्तारी वारंटी जारी किया है, जिसके चलते हमें गिरफ्तारी करनी होगी। इसके बाद पुलिस और समर्थकों के बीच झूमाझटकी शुरू हो गई। हालात काबू करने के लिए पुलिस ने वाटर कैनन का इस्तेमाल किया। जीवन सिंह शेरपुर ने कहा, जब तक एफआईआर नहीं हटाई जाएगी और केस दर्ज करने वाले पुलिसकर्मियों को निलंबित नहीं किया जाएगा, तब तक नहीं हटेंगे। प्रशासन जानबूझकर अपराधी बनाना चाह रहा है। पुलिस झूठे मुकदमे दायर कर रही है। वह आरोपियों को जानते जरूर हैं, लेकिन आरोपी पक्ष मेरा कोई लेना-देना नहीं है।

ठेका कर्मचारियों से रंगदारी मांगी, मारपीट की

जीवन सिंह शेरपुर पर आरोप लगा था कि उनके साथियों ने शराब ठेके पर पहुंचकर ठेका कर्मचारियों से एक लाख रुपए महीना रंगदारी मांगी। मना करने पर कर्मचारियों से मारपीट की। जातिसूचक गालियां दीं। मामला एससी-एसटी एक्ट, रंगदारी और मारपीट की धाराओं में दर्ज हुआ। घटना 26 जून को भावगढ़ थाना क्षेत्र के बेहपुर गांव की है। उसी दिन एफआईआर भी दर्ज हुई थी। मारपीट का वीडियो भी सामने आया। इसके बाद मंदसौर कोर्ट ने जीवन सिंह की गिरफ्तारी वारंट जारी किया था।

पीड़ित बोले- हमें धमकी दी गई, जातिसूचक शब्द कहे: पीड़ित कर्मचारी ऋतिक ने बताया कि 26 जून को वह और उसके साथी ऑफिस में थे। तभी पुष्पेंद्र सिंह, इंद्रपाल सिंह और नागेंद्र सिंह पहुंचे। उन्होंने कहा कि हर महीने 1 लाख रुपए दोगे, तभी ठेका चलेगा। मना करने पर मारपीट की गई और कहा कि हम जीवन सिंह शेरपुर के आदमी हैं। मारपीट में कर्मचारी पुष्कर को गंभीर चोट आई है, जो अस्पताल में भर्ती है। आरोपियों ने गाली-गलौज में जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किया।

जीवन सिंह के खिलाफ 12 केस दर्ज

एसपी अभिषेक आनंद ने बताया कि मामले में 7 लोगों पर केस दर्ज किया गया है। इसमें जीवन सिंह शेरपुर, पुष्पेंद्र सिंह, इंद्रपाल सिंह, नागेंद्र सिंह, कुलदीप सिंह, सचिन और देवी सिंह शामिल हैं। फिलहाल सभी आरोपी फरार हैं। शेरपुर के खिलाफ मंदसौर, रतलाम और नीमच जिलों में पहले से 12 केस दर्ज हैं। वहीं, मंदसौर कोर्ट ने जीवन सिंह शेरपुर के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट भी जारी किया है। किसी भी हालात में जीवन सिंह को गिरफ्तार करेंगे।

डिजिटल अरेस्ट कर 5 लाख ठगने वाला गिरफ्तार

भोपाल की महिला को वीडियो कॉल पर डराया, कहा था- आपके मोबाइल नंबर से होते हैं अनैतिक कार्य

भोपाल (नप्र)। खुद को पुलिस अधिकारी बताकर डिजिटल अरेस्ट करने के बाद महिला से पांच लाख रुपए ऐंठने वाले गिरोह के एक-एक सदस्य को पीथमपुर से गिरफ्तार किया है। बैंक खातों की जानकारी लेते-लेते पुलिस इस आरोपी

तक पहुंची थी। आरोपी के खाते में कुछ पैसे गए थे। साइबर क्राइम ब्रांच पुलिस ने बताया कि सत्यम शिवम परिसर कोलार में रहने वाली अनु वर्मा ने शिकायत करते हुए बताया था कि उनके मोबाइल फोन पर एक अज्ञात व्यक्ति का फोन आया था। उसने पहला फोन वॉट्सऐप कॉल के जरिए किया। इस बातचीत में खुद को पुलिस अधिकारी बताते हुए वीडियो कॉल के जरिए अनु वर्मा को बताया कि आपका मोबाइल नंबर अवैध है। उसका इस्तेमाल अवैध कामों में हुआ है। उसने धमकी दी थी कि आपके नंबर को सीज कर दिया जाएगा। आपको गिरफ्तार भी किया जाएगा। जालसाज व्यक्ति की धमकी से अनु वर्मा डर गईं। उनके इसी डर का फायदा उठाते हुए 5 लाख रुपए ऐंठ लिए गए।

12 घंटे तक रखा था डिजिटल अरेस्ट

ठगों ने महिला को एक फर्जी एफआईआर नंबर भी भेजा था। साथ ही नेशनल सीक्रेट केस बताकर किसी अन्य को बताने से मना किया गया। महिला को लगभग 12 घंटों तक अकेले ही वॉट्सऐप वीडियो काल के माध्यम से डिजिटल अरेस्ट कर रखा गया। धमकी दी गई कि किसी अन्य व्यक्ति को इसके बारे में बताया तो स्थानीय थाने के माध्यम से अरेस्ट करके पुलिस कस्टडी में ले लिया जाएगा। जिसके बाद आरोपियों द्वारा फरियादी के बैंक खाते में रखें रुपयों को अवैध रकम होना बताकर वेरिफाई करने के लिए भेजने को कहा गया।

भोपाल रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर दौड़ाई कार और स्कूटी

● स्टंट करते दिखे दो युवक ; लोगों ने बनाया वीडियो, जांच में जुटी आरपीएफ

भोपाल (नप्र)। भोपाल रेलवे स्टेशन पर एक युवक कार लेकर सीधे प्लेटफॉर्म नंबर 6 में घुस गया। वह ट्रैक के किनारे तक कार दौड़ाता रहा। वहीं एक दूसरा युवक प्लेटफॉर्म नंबर 4 पर तेज रफ्तार में स्कूटी चलाते देखा गया।

मामला शनिवार अलसुबह का है। वहां मौजूद यात्रियों ने युवकों का वीडियो बना लिया। इससे रेलवे स्टेशन की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठ रहे हैं। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने पर मामला आरपीएफ (रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स) तक पहुंचा। आरपीएफ भोपाल पोस्ट प्रभारी मनीष शर्मा ने बताया, हमें दो वीडियो मिले हैं। दोनों की जांच की जा रही है। फिलहाल इस मामले में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है, जांच के बाद कुछ कहा जा सकेगा।

प्रत्यक्षदर्शी बोले- हो सकता था बड़ा हादसा

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, कार सवार युवक तेज गति से प्लेटफॉर्म नंबर-6 की ओर आया और ट्रैक किनारे काफी आगे तक कार लेकर चला गया। शुक्र रहा कि उस समय वहां कोई ट्रेन नहीं थी, वरना बड़ा हादसा हो सकता था।

वहीं, प्लेटफॉर्म-4 पर स्कूटर दौड़ाते हुए दिखा दूसरा युवक भी यात्रियों की सुरक्षा के लिए खतरा बन सकता था।

पार्सल कार्यालय के सामने से है रास्ता

जानकारी के अनुसार, प्लेटफॉर्म नंबर-6 की ओर पार्सल कार्यालय के सामने से वाहन अंदर दाखिल हो सकते हैं। यही रास्ता स्टेशन की सुरक्षा में सबसे बड़ी कमजोरी बन चुका है। इसी मार्ग से कोई भी व्यक्ति बिना रोकटोक के प्लेटफॉर्म नंबर 6, 5 और 4 तक सीधे वाहन लेकर पहुंच सकता है। इस गेट पर ना तो कोई बैरिकेड है, न ही स्थायी सुरक्षा जांच की व्यवस्था।

भोपाल रेल मंडल में कर्मचारियों का विरोध प्रदर्शन

● भोपाल में रनिंग स्टाफ का फूटा गुस्सा, सीयूजी सिम की अर्थी निकाल जताया विरोध

भोपाल (नप्र)। वेस्ट सेंट्रल रेलवे मजदूर संघ (डब्ल्यूसीआरएमएस) के बैनर तले भोपाल मंडल के रनिंग स्टाफ ने रेलवे बोर्ड और जोनल रेलवे की कथित तानाशाही के खिलाफ सांकेतिक विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान कर्मचारियों ने विभाग द्वारा दिए गए सीयूजी सिम को जेब में रखकर प्रतीकात्मक रूप से उसका उपयोग बंद कर दिया और अंतिम दिन डीआरएम ऑफिस के बाहर सिम की अर्थी निकाल कर प्रशासन के प्रति नाराजगी जताई। प्रदर्शन का नेतृत्व मजदूर संघ के महामंत्री अशोक शर्मा ने किया। मुख्य शाखा सचिव अनिरुद्ध सोनी ने बताया कि रनिंग स्टाफ लंबे समय से प्रताड़ना झेल रहा है, लेकिन बार-बार शिकायतों के बावजूद रेलवे प्रशासन का रवैया उदासीन बना हुआ है। कर्मचारियों की शिकायतें न केवल अनसुनी की जा रही हैं, बल्कि उनकी परेशानियों में निरंतर इजाफा हो रहा है। संघ ने चेतावनी दी है कि अगर जल्द ही रनिंग स्टाफ की मांगों का समाधान नहीं किया गया, तो संघ के नेतृत्व में कर्मचारी बड़ा आंदोलन करने के लिए मजबूर होंगे।

मैं भी वही खिलौना लूंगा

व्यंग्य कथा

अलका अग्रवाल सिग्तिया

लेखिका साहित्यकार हैं।

आइए, आज इंटरनेशनल गेम के कुछ पात्रों से मिलते हैं। सबसे पहले मिलिए ट्रंपू बाबा से। मुझे लगता है सियारामशरण गुप्त जी ने यह कविता 'मैं तो वही खिलौना लूँगा' हमारे क्यूट-क्यूट ट्रंपू बाबा जैसे किसी बच्चे को देखकर लिखी होगी। 80 के आसपास पहुंच रहे हैं हमारे ट्रंपू बाबा, पर सूरत, सीरत दोनों में बच्चे से हैं, हैं ना? सूरत से चाइल्ड लाइक और सीरत से चाइल्डिश।

ट्रंपू बाबा को देखकर हम सोचते हैं काश हम भी दुनिया के सबसे पावरफुल मोहल्ले के सबसे ऊंचे घर में रहते, तो हमें हमारे घर वाले टोकते तो नहीं।

'ऐसे मत बोलो, सोच समझ कर बोलो, अपनी बात पर कायम रहो।'

हम अगर ट्रंपू बाबा की नकल करके कहते हैं, 'हम तो ऐसे हैं भैया।' हमें कहा जाता, 'उमर के साथ समझ आनी चाहिए कि नहीं?'

तब हमें चाइल्ड लाइक सूरत और चाइल्डिश सीरत वाले ट्रंपू बाबा से बहुत जलन होती है, हम क्यों उनकी तरह पल में तोला पल में माशा नहीं रह सकते। पहले मसकु बाबा को मस्त-मस्त बोलते नहीं थकते थे फिर उनको पस्त करने में लग गए। मानना पड़ेगा इतने बड़े मोहल्ले के दादा होने के बाद भी उनके भीतर का बच्चा हमेशा जिंदा रहता है। एक पल में किसी से पक्की कुट्टी कर लेते हैं तो दूसरे पल दोस्ती कर लेते हैं। उनके इस प्यारे से बचपने की चर्चा सब मोहल्लों में होती है। ट्रंपू बाबा को जो अच्छा लगता है,बहुत से लोगों को अच्छा लगता है। नहीं तो पाप लगता है।

सच्ची ट्रंपू बाबा की मासूमियत पर बड़ा प्यार आता है। दो बच्चे आपस में लड़ते हैं तो यह कभी उन्हें दोस्त बनाने में लग जाते हैं तो कभी उन्हें लड़ाने में लग जाते हैं। कुछ दिन पहले नम्मू बाबा और मुन्नी बाबा गन- वन ले करके लड़ाई करने लग गए। बाद में पता नहीं आचानक आपस में समझौता भी कर लिए। तब हमारे ट्रंपू बाबा ने ऐलान कर दिया, 'हम बिल्ली बनकर उनकी लड़ाई में कूदे थे, हमने उनकी लड़ाई रोकी है।'

नम्मू बाबा ने बोला, 'ट्रंपू झूठ बोल रहा है।'

तब ट्रंपू ने भी कह दिया,'हमने नहीं रूकवाई लड़ाई।'

लेकिन फिर पता नहीं कहां से बैठे-बैठे एक दिन अपने बड़े भाइयों की याद आ गई। जिनको शांति खिलौना मिला था। जैसे रूज़वेल्ट भैय्या विल्सन भैय्या,कार्टर भैया,ओबामा भैय्या। ट्रंपू बाबा मचल गए, 'हमें भी पीस वाला खिलौना चाहिए। इन भैया लोगों से ज्यादा तो हमने सब की लड़ाई रूकवाई है।'

अपने दोस्त इज़रा के बैंजी को फोन किया। बैंजी ने कहा, 'ट्रंपू मेरे दोस्त आजकल इरनू के खोम्मी बाबा से मेरी लड़ाई हो रही है। वो बहुत तंग कर रहा है। उसने बड़े-बड़े बम वाले खिलौने भी मंगा रखे हैं। तुम एक काम करो, मेरी इस लड़ाई में तुम मेरे साथ आ जाओ। तुमको पता है ना हमस ,ग़ज़्ज़ा मोहल्ले में उसने बहुत से बदमाश बच्चों को पाल रखा है । हम मिलके सबक सिखाएंगे, ये डरके शांत हो जाएंगे तो तुमको पीस खिलौना मिल जाएगा।'

ट्रम्पू बाबा खुश हो गए, 'सच्ची बेंजी? और मेरे होते और कोई दादा नहीं हो सकता। कौन से खिलौने से इरनू मोहल्ले का खोम्मी डरा रहा है?'

'अरे वही एटम खिलौना जो आतंकसतान के मुन्नी के पास है ना।'

'देखो बेंज़ी, मुन्नी बहुत अच्छा है, वो भी चाहता है कि मुझे शांति खिलौना मिल जाए। उसका नाम मत बिगाड़ो, दूसरे गुट के बच्चों ने बेमतलब उसको बदनाम किया है।'

'अच्छा फ्रेंड ट्रम्पू ,चलो इरनु को उसके एरिया में चल कर ही पटकनी देते हैं।'

ट्रंपू बाबा ने बड़े-बड़े डराने वाले खिलौने ले जाकर खोम्मी बाबा के ऊपर फेंक दिए फिर ताली बजा-बजा के नाचने लगे, 'हे हमने इरनु को डरा दिया हरा दिया, उसके खतरनाक खिलौने तोड़ दिए, अब शांति होगी और मुझे शांति खिलौना मिल जायेगा।'

ट्रंपू बाबा ने सोचा था, खोम्मी अब चुप बैठ जाएगा, पर वो तो पुत्तू बाबा की शह पर और आँखें दिखाने लगा, पासा उल्टा पड़ गया खोम्मी बाबा ने कहा, 'ठेंगे से! हमारा कोई खिलौना नहीं टूटा, हमने अपने डरावने और मंहगे खिलौने पहले ही सेफ जगह रख दिए थे,तुम्हारे मंहगे खिलौने और डॉलर बर्बाद हुए, तुम्हारा ही नुकसान हुआ,तुम क्या सोचते हो तुम गब्बर की तरह कहोगे कि ये हाथ हमें दे दे, तो हम दे देंगे? कितने भोले हो, हमारे पास भी पुत्तू दादा है, वो तुम्हारे हाथ तोड़ देगा।'

यही नहीं खोम्मी बाबा ने कतरा पे डरावने खिलौनों से ठायें-ठायें चालू कर दी, तब ट्रंपू बाबा ने बेंज़ी बाबा से कहा, 'तुम खराब हो, मुझे फंसा दिया। जाओ तुमसे मेरी कुट्टी।'

उसके मोहल्ले के कुछ लोग भी कहने लगे, 'तुम शांति खिलौना मांग रहे थे तो तुमने वायलेंस क्यों किया? तुम सग्गा मीत्ती करने के नाम पर और लड़ाई कराते हो। बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाने बन जाते हो।'

ट्रंपू बाबा रोते से बोले, ''मैं किसी शादी को बेगानी नईं समझता,सबको अपनी या अपने परिवार की मानता हूँ, इस पारी में भी अगर मुझे शांति खिलाना नहीं मिला तो सब खतम ये मेरी आखिरी पारी है।'

'पर बच्चू लड़ाई करोगे तो तुम्हें शांति खिलौना कैसे मिलेगा?'

ट्रंपू बाबा ने मासूम आवाज में कहा, 'पहले डराऊंगा फिर शांति लाऊंगा। इस बार शांति खिलौने लेके रहूंगा, लेके रहूंगा लेके रहूंगा!'

गेम की ताज़ा अपडेट ये है किसी ने शायद ट्रंपू बाबा की काउंसलिंग की है। ट्रम्पू बाबा ने अपनी खेल रणनीति बदल ली है। दो दिन बाद इंटरनेशनल गेम के समूह में हमने फोटो देखी जहां ट्रंपू बाबा, कांगू और रावंडू की कुट्टी को मिट्ठी में बदलने में भूमिका में दिखे। शांति दूत कहलाने वाले नम्मू बाबा के साथ भी गेम बड़ी डील की बात की। ग़ज़्ज़ा में लोगों के दुःख से दुखी दिख रहे हैं। बेंज़ी की बातें जो अच्छी लगती थीं अब उसकी दादागिरी लगने लगी हैं क्योंकि उसके कारण गज़्ज़ा के बच्चे भूखे मरे । बेंज़ी की कोई बात वो अभी नहीं सुन रहा क्योंकि अब उसे शांति खिलौना मिलता सा लग रहा है। ट्रंपू बाबा खुश है कि अब तो शांति खिलौना देने वालों के कानों में उसके जूं रेंगेगी।

कोड-आई- विज्ञान व दर्शन का अद्भुत संगम

पुस्तक समीक्षा

भूपेन्द्र भारतीय

समीक्षक

पुस्तक : कोड आई
लेखक: अजय चंदेल
प्रकाशक : सर्व भाषा प्रकाशन
मूल्य : 245

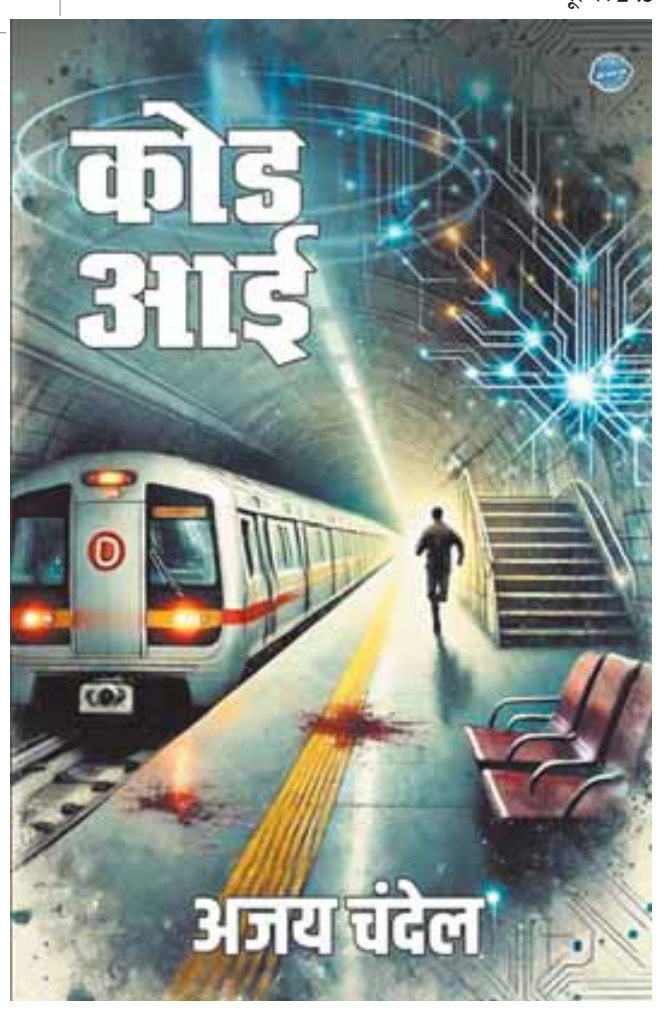

विज्ञान व प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन में कितनी जगह बना ली है और टेक्नोलॉजी जीवन को कितना नियंत्रित कर रही है यह भी अब किस से छूपा नहीं है। हर हाथ को काम के स्थान पर हर हाथ को मोबाइल का काम दिया जा चुका है।

कोड-आई' उपन्यास के लेखक अजय चंदेल इस उपन्यास के में कुछ इन चुनौतियों को हमारे सामने रखते है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(कृत्रिम बुद्धिमत्ता) अब मानव के लिए एक गंभीर व बड़ी चुनौती बनती जा रही है। हर बात की एक सीमा होती है। सुविधा के साथ सावधान बढ़ानी होगी। मानव की गलती है कि उसने एआई को अपने जीवन में इतना स्थान दे दिया कि अब मानव उससे भागने लगा है। उसकी निजता अपनी नहीं रही। यह उपन्यास इन सब बातों को कहानी के माध्यम से समझाने में बहुत कुछ सफल रहा है। उपन्यास अपनी पठनीयता व नये विषय के कारण रोचक है। आज हम सब को समझने की जरूरत है कि मानव जीवन का मूल अस्तित्व बना रहना चाहिए, नहीं तो कृत्रिम बुद्धि हमें कहीं का नहीं छोड़ेगी। लेखक ने इस बात की चिंता बहुत तथ्यात्मक रूप से उपन्यास में समझाने की अच्छी पहल की है। सामान्यतः हिन्दी में ऐसे उपन्यास बहुत कम लिखे गए हैं। मैंने तो यह पहला हिन्दी उपन्यास एआई विषय पर पढ़ा है। एक तरफ जीवन दर्शन है जो हमें कहता है कि मानव का अस्तित्व प्रकृति व समाज के आपसी सहयोग व संबधों पर आधारित है। वहीं विज्ञान हमारी सुविधा के लिए है ना कि विनाश व मानव के मूल स्वभाव को परिवर्तित करने के लिए। उपन्यास में प्रवाह है लेकिन बीच बीच में पात्र स्वयं ना बोलते हुए लेखक स्वयं अपने विचार व स्पष्टीकरण देने से उपन्यास का रोमांच खुल जाता है। लेकिन लेखक अपनी बात कहने में सफल रहे। यह उपन्यास वास्तव में विज्ञान व मानव दर्शन का अद्भुत उदाहरण है। पुस्तक का सर्व भाषा प्रकाशन दिल्ली से अच्छा व स्तरीय हुआ है। उपन्यास को नये विषय व भविष्य में एआई का हमारे जीवन पर गंभीरता से पड़ते प्रभाव के कारण सुधी पाठकों को जरूर पढ़ना चाहिए।

सबसे कठिन पल

सुधीर कुमार सोनी

वह मिला, वर्षों बाद
उसने बताया,
मुसीबतें, संकट और परेशानी
सब मेहमान थे उसके
बहुत कठिनाई भरे दिन बीते हैं- मेरे
मैंने कहा- कठिनाई तो सबके जीवन में कभी भी
अपना स्थान लेने आ सकती है।
सबके जीवन के बीते दिनों के पलों में
सरल, सुखद और कठिन पल हैं।
सबसे कठिन पल वह नहीं होता
जब आपको आपके काम से,
बेदखल कर दिया गया हो
और आपके हाथ खाली हों।
सबसे कठिन पल,वह भी नहीं होता
जब आपके पिता ने आपको
अपने घर से,निकाल दिया हो।
सबसे कठिन पल वह भी नहीं होता
जब आपका सबसे अभिन्न मित्र
आपके बुरे दिनों में
अपना हाथ खींच ले।
सबसे कठिन पल वह होता है
जब आप किसी चौराहे पर खड़े हो
और उसमें से कोई भी रास्ता
आपको,आपकी मंजिल तक
नहीं पहुंचाता।
सबसे कठिन पल वह होता है
जब आपने अपने पुत्र से कुछ पूछा हो
और उसके दोनों हाथ , कमर पर आ जाते हैं और
चेहरे पर गुस्से की परत चढ़ जाती है।
सबसे कठिन पल वह होता है
जब आप यात्रा में हो
और घर से, कोई दुःखद समाचार मिलता है
उस समय,यात्रा से लौटने का पल
बहुत कठिन होता है।
सबसे कठिन होता है
सबसे सरल जीना।

जनप्रतिनिधि अमृतवाणी केंद्र?

कटाक्ष

दिनेश विजयवर्गीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मैं पार्क में प्रातः कालीन भ्रमण के बाद पेड़की छाया में रखी बैंच पर बैठा ही था कि सामने से पत्रकार पत्रकार मुंशी आता दिखाई दिया। वह नमस्कार करता मेरे पास आकर बैठ गया। मैंने कहा 'मुंशी तुम इतने व्यस्त कैसे चल रहे हो?' 'अंकल! यह पत्रकारिता का काम ही ऐसा है । कभी यहां कभी वहां दौड़ भाग कर समाचार जुटाने पड़ते हैं। आज भी सुबह दस बजे एक संत जी ने प्रतिनिधि अमृतवाणी केंद्र खोला है, उसका उद्घाटन समाज सेवी सेवक राम जी करेंगे । मुझे वही जाना है।

मुंशी यह कैसा केंद्र खोला जा रहा है? जनप्रतिनिधि अमृतवाणी केंद्र! मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा ?' 'अरे अंकल !इस केंद्र में जनप्रतिनिधियों को अमृतवाणी जैसी मीठी वाणी बोलने की कला सिखाएंगे।' 'तब तो अन्य राज्यों में ऐसे केंद्र खोले जाना चाहिए । आज तो जुबान फिसलने वाले नेताओं को अमृतवाणी बोलने सीखने की जरूरत है।

सभी मीठा खाना और मीठा सुनना पसंद करते हैं। बस बोलने में भी कभी लोग गुस्से में या कभी अपने को उजागर करने के लिए कड़वे वचन बोल देते हैं । ये कड़वी वाणी,कभी समाज में तो कभी सियासत में उफान मारने लगती है। हमारे जन प्रतिनिधि विधायक हों या मंत्री अति उत्साह के चलते कभी अपनी मर्यादा तोड़ अल्लम गल्लम कुछ भी बोलने लगते हैं । अभी कुछ समय पहले ही एक प्रदेश के मंत्री जी जुबान किसी ऊंचे पद वाले के लिए फिसल गई। राजनीतिक हल्कों में किरकिरी हुई । यहां तक की माफी मांगने तक की भी नोबत आ गई। कोर्ट कचहरी वाला चक्कर पड़ गया । उनका सोच है कैसे भी हो मंत्री पद बचा रहे । हमारे नेता कई बार बिना सोचे समझे अपनी जिम्मेदारी को दर किनार कर कुछ भी बोल ,जनता के दुलारे बनना चाहते हैं । पर उनके बोल कभी उन्हें छठी का दूध याद दिला देते हैं ।

इसलिए संत जी हमारे जनप्रतिनिधियों के लिए निःशुल्क अमृतवाणी केंद्र संचालित करने जा रहे हैं। अब किसी भी नेता मंत्री या व्यक्ति के मुंह से निकलने वाले शब्द मीठे व जिम्मेदारी पूर्ण हों, इसके लिए प्रातः कालीन कक्षा शुरू की जा रही है । संत जी लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी हैं। वह नहीं चाहते कि किसी नेता या मंत्री को जनता, पार्टी व सरकार का कोप भाजन बनाना पड़े। इसलिए वह सप्ताह में दो दिन अमृतवाणी केंद्र चालू कर रहे हैं,।

लघुकथा

मर्ज

सुरेश सौरभ

वकील साहब ने अपना माथा पीट लिया-'बोले पता नहीं तुम लोग किस दुनिया में रहते हो अगर अपनी बेटी को कक्षा पांच भी पढ़ा लेते, तो आज यह केस मैं जीत जाता, न लड़की बोल पा रही है, न ढंग से मीडिया में कुछ बता पा रही है, लो मुफ्त में छूट गये दुष्कर्मी सामंती दबंग। जज साहब भी समझ गये, मामला ढीला-ढाला कमजोर है, इसलिए केस खत्म करो। अगर मीडिया को ही ढंग से फेस कर लेती तो.. साहेब का करी बरसों पहिले गांव के इसकूल मा पढ़त राहै, उमा बच्चा कम पड़े, सरकार स्कूल बंद करिके, कम बच्चा दूसरे इसकूल मा भेज दिहिस। साहेब!

चार कोस दूर कौन लड़की जात भेजत। बेचारी न पढ़ि सकी। गरीबी मा खाना चलाना मुश्किल प्राइवेट कहाँ से पढाइत साहेब'-दुष्कर्म पीड़िता का दुःखी पिता डबडबाई आंखों से बोला। वकील साहब दीर्घ श्वांस लेकर बोले-'यह मर्ज बड़ा दुखदायी है भाई। पता नहीं कब, यह ऊपर वाले, ज़मी पर उतर कर गरीबों का मर्ज देखेंगे ?'

तीन बीघा खेत

गर्मियों की आहट के साथ खेतों में गेहूं की फसल अपनी सुनहरी चादर ओढ़े लहराने लगी थी। इस बार मनकू के खेत में मेहनत रंग लाई थी। वर्षों बाद ऐसा हुआ था कि फसल समय पर तैयार हो रही थी–बस आठ दिन और, फिर कटाई शुरू हो जाती।

मनकू खेत की मेड पर लगे नीम के पेड़ की छांव में बैठा फसल को निहार रहा था। उसकी आंखों में सिर्फ लहलहाती बालियाँ नहीं, बल्कि ढेरों सपने लहरा रहे थे। उसने वर्षों की तंगी, अभाव, और मन की कसक को इस फसल में झोंक दिया था। इस बार कुछ कर दिखाना था–अपने लिए नहीं, अपने परिवार के लिए।

उसके मन में एक एक कर विचार उमड़ने लगे–बच्चों के कपड़े पिछले दो सालों से नहीं बदले हैं, राधा और सुन्नु के कपड़े अब चिंदियों जैसे हो चले हैं। सांवली की साड़ी इतनी पुरानी हो चुकी

कहानी

श्याम कुमार कोलारे

है कि जंहा-जहाँ सिलाई के निशान देखकर पहनने से शर्म आती है। माँ... वो तो कभी अपने लिए कुछ कहती ही नहीं। बाबा के जाने के बाद से तो जैसे वो खुद को दो रोटियों और एक पुरानी खाट में समेट चुकी है।

'इस बार...' मनकू ने सोचा, 'इस बार माँ के लिए नई साड़ी और गर्म कंबल जरूर लाऊँगा।'

सुन्नु और राधा तो कई दिनों से साइकिल के लिए जिद कर रहे थे। रोज़ तीन किलोमीटर पैदल स्कूल जाना और वापस आना उन नन्हे पैरों के लिए कितना कठिन होता है, ये मनकू जानता था। लेकिन क्या करता? ती बीघा खेत में परिवार का गुजारा करना ही एक संघर्ष था। त्योहार, बीमारियाँ, रिश्तेदारियाँ - सब जैसे ज़िन्दगी की खुरदरी जमीन पर बोझ बनकर लदे थे।

आज मनकू के भीतर पहली बार उम्मीद ने घर किया था। उसने फसल को देखा और सुकून की सांस ली।

धीरे-धीरे नींद उसकी आंखों में घुल गई और वह उसी पेड़ के नीचे सो गया, जहां बैठकर उसने अपने सपनों की फसल सींची थी।

कितनी देर बीती, पता नहीं। अचानक तेज हवा की सनसनाहट ने उसकी नींद तोड़ी। आंखें खोलीं तो आसमान में काली घटाएं घिर आई थीं। सूरज बादलों के पीछे सहमा-सा छिप गया था। कुछ ही देर में बादलों ने गर्जना की और उसके सामने आसमान ने कहर बरपाना शुरू कर दिया।

बड़े-बड़े ओले, तेज़ हवाएं, और तूफ़ान ने फसल को नोच डाला। गेहूं की सुनहरी बालियां, जिन पर उसने अपनी उम्मीदें बोई थीं, तिनकों की तरह बिखर गईं। मनकू पत्थर की मूर्ति बनकर उस मंजर को देखता रहा–जैसे जीवन भर की कमाई किसी ने छीन ली हो।

उसकी आँखों से बहते आँसू उस आसमानी बारिश से होड़ लेते रहे। वो रोया–खामोशी से, लाचार होकर।

शाम होते-होते खेत एक सुनसान युद्धभूमि में बदल चुका था। अधपकी बालियाँ, टूटी टहनियाँ, और बिखरे सपने–हर तरफ सिर्फ तबाही थी। गांव के दूसरे किसान भी अपने खेतों के पास खड़े होकर उसी तरह रो रहे थे–जैसे धरती माँ की गोद उजड़ गई हो।

मनकू एक बार फिर... हार गया था।

उधर घर में राधा और सुन्नु अपने नए कपड़ों और साइकिल के सपनों में खोए हुए थे।

'बाबा ने कहा है इस बार हमारी नई साइकिल जरूर आएगी!'

'और मेरे लिए गुलाबी रंग की फ्रॉक!' राधा ने मुस्कुराते हुए कहा।

बच्चे यह नहीं जानते थे कि बाहर आकाश से ओले ही नहीं, उनके

सपनों पर भी मौत की बरसात हो चुकी थी।

रात ढले मनकू घर लौटा। उसके चेहरे की थकान, कपड़ों की गीली मिट्टी और आँखों की नमी सब कुछ कह गई। सांवली ने एक नज़र में समझ लिया था कि क्या हुआ है।

वो मनकू के पास आई, उसका कंधा सहलाया और बोली,

'चलो हाथ-मुँह धो लो। आमाड़ी की भाजी बनाई है, ज्वार की रोटी और महेरी रखी है। सुबह से खेत में थे, कुछ खाया भी नहीं।'

कुछ पल चुप्पी रही... फिर सांवली ने उसका चेहरा थामते हुए कहा,

'जो हमारे हाथ में नहीं है, उसके लिए दुखी होकर क्या मिलेगा? जब तक हमारे हाथ-पैर सलामत हैं, हम फिर से कोशिश करेंगे। ऊपर वाला हमें परखता है, लेकिन हमारी मेहनत को कभी व्यर्थ नहीं जाने देता।'

मनकू ने उसकी आँखों में झांका। वहाँ कोई आँसू नहीं था–सिर्फ उम्मीद की चमक थी। और वहीं, उस पल... मनकू ने फिर से अपने आप को समेटा और अगली सुबह से खेत की तैयारी में जुट गया।

अब वह दिन में खेत में काम करता और रात को गाँव के सेठ अंसुलाल के घर चौकीदारी करता। पूरे छः महीने तक उसने एक पल की भी राहत नहीं ली। हर सुबह उसके कदम खेत की ओर जाते और हर रात वह सेठ के अहाते में चक्कर लगाता रहा। उसका शरीर थकता था लेकिन उसका मन... वह रोज़ और मजबूत होता गया।

महीने बीत गया।

और फिर... एक दिन ऐसा भी आया।

मनकू के हाथ में एक पुराना थैला था। उसमें थी–राधा की गुलाबी फ्रॉक, सुन्नु के लिए एक चमकदार कमीज़, माँ के लिए रेशमी साड़ी और नया गर्म कंबल, और हाँ, एक चमचमाती नीली साइकिल।

उस दिन उसकी आँखों में थकान नहीं, संतोष की चमक थी। वह जानता था–वह हारकर नहीं बैठा, उसने अपने सपनों को फिर से बोया और इस बारज्काट भी लिया।

बच्चे साइकिल देखकर उछल पड़े। माँ ने चुपचाप आँचल से आँखें पोंछ लीं, और सांवली ने मुस्कुराते हुए मनकू के हाथों से वह थैला ले लिया - जैसे उसका जीवन फिर से सज गया हो।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

मिस्त्री- जासूस की भूमिका में राम कपूर ने डाली जान

एक चतुर, चालाक और प्यारे जासूस की दमदार औभूमिका में जान डालकर रामकपूर ने जियो हॉटस्टार पर रिलीज़ वेबसिरीज़ - ' मिस्त्री' को देखने लायक बना दिया है । एक जासूस की भूमिका में हास्य के पुट की स्वस्थ परम्परा रही है और यह अभिनेता पर निर्भर करता है कि वह हास्य के इस अन्तर्प्रवाह के साथ भूमिका की गम्भीरता को कितनी कुशलता से निभाता है या फिर हास्यास्पद स्थिति का निर्माण करता है ? राम कपूर ने हास्य के पुट के साथ इस भूमिका को पूरी गम्भीरता से निभाया है ।

एक ऐसा जासूस जो किसी से भी हाथ मिलाते ही हाथ धोने लगे, जब पुलिस वाले लात मारकर किसी क्रिमिनल के घर का दरवाजा तोड़ रहे हों तब उसे इस बात की चिन्ता हो कि दरवाजा गन्दा हो गया है, ऐसे ही जासूस अरमान मिस्त्री की कहानी है मिस्त्री, एक ऐसा जासूस जिसे मनोग्रसित बाध्यता विकार (आबसेसिव कम्पल्सिव डिसआर्डर) है। यह सिरीज अमेरिकन शो मॉन्क का एडाप्शन है, जियो हॉटस्टार पर इस सिरीज के आठ एपिसोड आ गए हैं। हर एपिसोड 30 से 35 मिनट का है, ये सिरीज आपका अच्छा टाईम पास और मनोरंजन करती है ।

सिरीज़ में राम कपूर ने तो बढ़िया अभिनय किया ही है मोना सिंह ने भी पुलिस अफसर की भूमिका में कमाल काम किया है और वो लगी भी कमाल की हैं । शिखा तल्सानिया अरमान की असिस्टेंट बनी हैं और वो भी काफी क्यूट लगी हैं । अभिजीत चित्रेश और क्षितिज दाते ने भी अच्छा अभिनय किया है ।

अर्श बोरा और रित्विक जोशी की लिखी और ऋषभ सेठ निर्देशित यह सिरीज ठीक ठाक है मगर जिस शो मॉन्क (2002-2009) पर यह आधारित है, उसे आये करीब दो दशक हो चुके हैं। यह वह दौर था जब देसी टीवी पर श्याम डी-सिल्वा और गोपी ऐसे केसेज की 'तहकीकात' किया करते थे। उसके बाद से तो हमारे दर्शक सीआईडी के इतने एपीसोड देख चुके हैं कि मिस्त्री के ज्यादातर केसेज बहुत ही आसान लगते हैं। हाँ, सुष्मिता वाले केस में बेशक थोड़ी रुचि बनी रहती है। फिर, अरमान को होशियार दिखाने के चक्कर में सहमत सिद्दीकी जैसे ऑफिसर को जिस तरह बेवकूफ दिखाया है, वह भी अटपटा लगता है। मतलब, सहमत जरा भी लीक से हटकर नहीं सोचती, चीजों को शक की निगाह से नहीं देखती, क्योंकि ये काम तो अरमान के हैं। केसेज में थोड़ा ज्यादा वजन और गहराई होती तो और बेहतर किया जा सकता था।

इस वेबसिरीज़ का सबसे मजबूत पक्ष है उसका निर्देशन । ऋषभ सेठ ने इस क्राइम-कॉमेडी को बहुत खूबी के साथ से पेश किया है । एक सीन में जब मिस्त्री एक डबल मर्डर केस पर मीटिंग में होता है, वह व्हाइटबोर्ड पर लगे रंग-बिरंगे पिन्स को अपने विकार की वजह से फिर से क्रम से लगाने लगता है। सबको लगता है ये क्या बेतुकी हरकत है, लेकिन अगले ही पल जब सभी पिन्स गिर जाती हैं, तो मिस्ट्री उन्हें उनकी सही लोकेशन पर लगा देता है, वो भी बिना किसी गड़बड़ी के। तभी सब समझते हैं कि उसका विकार कमजोरी नहीं, एक खासियत है ।

कुल मिलाकर यह एक ठीक ठाक सिरीज़ है, कई सुलझाते गये मामले ठीक-ठीक हैं तो कई बढ़िया हैं। अरमान मिस्त्री (राम कपूर) की निज़ी जिन्दगी का सस्पेंस हर एपीसोड में नजर आता है और वो दिलचस्पी भी पैदा करता है । अरमान के तरीके कहीं क्यूट लगते हैं तो कहीं आपको लगता है ये कुछ ज्यादा हो गया है। यह सिरीज कोई सस्पेंस थ्रिलर नहीं है, आपका हल्का फुल्का मनोरंजन करती है । बीच बीच में कुछ केस के कुछ प्वाइंट्स काफी दिलचस्पी भी पैदा करते हैं । नये नये चरित्र आते रहते हैं इसलिए सिरीज में कुछ ना कुछ नया दिखता रहता है ।

वक्रोक्ति

मुकेश नेमा

लेखक मप्र के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

नौकर थे, क्या से क्या हो गए

इंसान बतौर नौकर तब तक ही कायदे ये रहता है जब तक उसे मौका ना मिले। इतिहास ऐसे क़िस्सों से भरा पड़ा है जब गुंजाइश मिलते ही नौकर क्या क्या नही हो गए। ऐसे नौकर हुए जो जब कुछ हुए तो उनके मालिक उनकी जूतियाँ उठाने लायक भी नही रहे।

नौकरो की दुनिया मे जिस बंदे का नाम सबसे फख्र से लिया जाना चाहिये वो है अब्दुल मियाँ। आगरा के रहने वाले सच्चे हिंदुस्तानी अब्दुल एक जेल मे मामूली मुंशी थे। किस्मत से नौकर बन कर इंग्लैड के राज परिवार के घर मे दाखिल हुए और पलक झपकते महारानी क्वीन विक्टोरिया के तथाकथित प्रेमी की हैसियत हासिल की। तथाकथित इसलिए क्योंकि बहुतेरे मानते है कि रानी उनकी अम्मा की उम्र की थी ,इसलिए ऐसा नही हो सकता। पर वाकई क्या हुआ यह बात खुदा के अलावा केवल रानी और अब्दुल मियाँ ही जानते हैं।चूंकि ये दोनो अब अलग अलग कब्रों मे करवटें बदल रहे हैं ऐसे मे हमें जगजीत सिंह की उस मशहूर गजल को याद करना चाहिए कि जो प्रेम मे उम्र का लिहाज करने को मना करती है। बहरहाल कुछ ऐसे भी दस्तावेज उपलब्ध हैं जो यही मानते हैं कि रानी दीवानी थी अब्दुल की। उसने रानी को उर्दू बोलना ,चिकन करी खाना और प्रेम करना सिखाया बदले में रानी ने उन्हें तीन सौ एकड़ की जागीर और पता नही कौन कौन से ओहदे दिए।अब्दुल बीमार पड़े एक बार ,क्वीन उन्हें देखने उनके घर गई ,उसके बिस्तर की सिलवटे ठीक करती रही और गुडमार्निंग से लेकर गुडनाईट तक छह छह लैटर लिखती रही।ज़ाहिर है पूरा ब्रिटिश शाही परिवार रोया कलपा इस रिश्ते से। पर रानी तो रानी थी। आधी दुनिया उसके घुटनों के नीचे थे और वो खुद अब्दुल के पाँवो मे थी। ऐसे में जब तक रानी जिंदा रही ,मुंशी अब्दुल करीम राजा बने रहे और तभी इंडिया वापस भेजे जा सके जब रानी कब्र के हवाले हुईं।

चूंकि ब्रिट्रिश तब तक थोडे बहुत शरीफ हो चुके थे ,वरना वो मिस्र वालो का तरीका भी आजमा सकते थे। पुराने जमाने के मिस्र मे खास खास ,मुंहलगे नौकरो को मालिक के साथ जिंदा दफना दिये जाने का रिवाज था। ऐसा करने के पीछे वाजिब वजह भी थी उनके बाद ,पहली तो ये मरने के बाद भी वफ़ादार नौकर साथ बना रहता है आपके और दूसरी यह कि फिर उसे तनख्वाह भी नहीं देना पड़ती।

हमारे हिंदुस्तान मे भी एक काबिल नौकर हुए। इनका नाम था जमात उत दिन याकूत। ये महाशय भी थ्री इन वन थे। हिंदुस्तान की पहली महिला सुल्तान हुई रजिया। याकूत रजिया के नौकर से तरक्की करते हुये सलाहकार और प्रेमी का पद हासिल करने मे कामयाब रहे। लोग बताते है कि रजिया तभी हँसती मुस्कराती थी जब याकूत उसके आसपास हो। पर यह बात भी सच है कि रजिया के भाइयों को अपना यह मुँहबोला जीजा पसंद नही आया। और वो रजिया की जान के दुश्मन हुए।

जो कुछ भी हो पर नौकर भी इंसान है और हमारे अच्छे व्यवहार के हकदार भी। नौकरों की इज़्ज़त की ही जाना चाहिये ! इसलिये नहीं कि वो आपकी ज़िंदगी आसान बनाते है ,बल्कि इसलिये क्योंकि वो आपके बारे में उससे ज़्यादा जानते है जितना आप सोचे बैठे हैं। उनके प्रति दयालु होना जरूरी है। पर दयालुता मे रूस की महारानी कैथरीन द ग्रेट सैकेंड की कोई दूसरी सानी मिल पाना नामुमकिन सा ही है। ये अति दयालु अतिसुंदर रानी अपने सैकडो जवान नौकरो को अपने पति से भी अधिक सम्मान देती थी। ये सम्मान इतना अधिक था कि उनकी जितनी भी औलादे हुई उसमे उनके पति का कोई योगदान नही था। ये काम भी नौकरो के ही जिम्मे रहा। ऐसी उदार मालकिन मिले तो किसे नौकर होने से इनकार होगा।

खुद हमारे देश मे सन बारह तेरह सौ मे गुलाम इतने ताकतवर हो उठे की दिल्ली के राजा बन बैठे। उनका ख़ानदान,गुलाम वंश कहा गया। इसी वंश के कुतुबुद्दीन एबक ने कुतुबमीनार बनवाई जो आज ही नौकरो की हैसियत बताने के लिये अपनी जगह पर मौजूद है।

जहाँ तक नौकरो की बात है। निभाना तो मालिक को ही पडता है , ये कहावत ऐसे ही मशहूर नही हुई है कि आदमी की अच्छाई परखने के लिये यह देखना चाहिये कि उसके दोस्त और नौकर कितने पुराने हैं। यूनान के मशहूर कहानी कहने वाले ईसप। महान सेंट पेट्रिक जिन्होने ईसाई धर्म को बढाने मे जिंदगी लगा दी। अमेरिका मे दास प्रथा के खात्मे के लिये लडने वाले नेट टर्नर। ये सभी अपनी जिंदगी के शुरूवाती दौर में नौकर ही थे। पर ये अपने मालिको पर भारी पडे और इतने भारी पड़े कि इन्हे तो सब जानते है इनके मालिको को कोई नही जानता।

खुद हमारे आबकारी विभाग मे एक सिपाही नौकरी छोड़ चुनाव के मैदान में कूदे। किस्मत के धनी थे इसलिए जीते और अचानक मंत्री होकर आबकारी के अपने भूतपूर्व अफसरों के सलाम के हकदार हुए। बड़ी विकट स्थिति थी ये। बहरहाल हम आबकारी वालों की क़िस्मत अच्छी थी कि ये महानुभाव ज्यादा दिन तक सरकार नही रह सके और विभाग का आत्मसम्मान एक बार फिर बहाल हुआ।

पुरूषस्य भाग्यम तो विधाता भी नहीं जानते। ऐसे में हल्के में मत लें अपने नौकरों को। नज़र बनाये रखें उन पर। लिहाज़ करते रहे उनका। वक्त पर तनख्वाह ,इनाम तो देते ही रहे उन्हें और उनके सर पर तलवार भी लटकाए रखें। ये सावधानी जरूरी है वरना पता नहीं उनमें से कौन कब सवा सेर होकर आपकी छाती पर मूँग दलने लायक बन जाये।

लघुकथा

उत्तराधिकारी

रामेश्वरम तिवारी

बड़े दिनों के बाद अभिन्न मित्र विनोद का फोन आया। हम दोनों के बीच हलो-हाय हुई। देर तलक ख़ैरियत और सलामती को लेकर बातें होती रहीं ! अंत में विनोद ने कहा कि उसने पार्टी का आयोजन रखा है, अतः वह सपरिवार आमंत्रित है। कारण पूछने पर बोला कि फ़िलहाल गोपनीय रहने दो। जब तुम आओगे, तो स्वमेव पता चल जाएगा !

नियत स्थान पर, नियत वार को, नियत समय पर जब मैं सपरिवार पार्टी स्थल पर पहुँचा, तो भव्य आयोजन को देखकर मेरी आँखें फटी की फटी रह गई। देखा कि पाँच सितारा होटल, रौशनी की चकाचौंध, देश की नामी-गरामी हस्तियों का आगमन हो रहा है।

मुझे दूर से देखते ही विनोद ने दो कदम आगे बढ़ाए और गले से लगा लिया। श्रीमती ने उसकी ओर गुलदस्ता बढ़ाया, तो वह बोला- 'भाभी जी, अभी रहने दीजिए। बस ! थोड़ी देर में कार्यक्रम शुरू होने वाला है। तब आप अपने हाथों से प्रमोद को दे दीजिएगा।'

थोड़ी देर बाद विनोद बगुले-सा श्वेत कुर्ता-पाजामा पहने हुए बड़ी शान सेस्टेज पर हाज़िर हुआ। उसने अपने हाथ में माइक लिया और आगंतुकों कोसंबोधित करते हुए बोला- 'मित्रों ! आप यह जानने के लिए बड़ी बेसब्री सेउत्सुक होंगे कि मैंने आज यह पार्टी क्योंकर रखी है, तो आपको मुझे यह बातबताते हुए बेहद ख़ुशी और गर्व महसूस हो रहा है। यह जो मेरी बग़ल में मेराबेटा प्रमोद खड़ा है जोकि मेरा राजनीतिक उत्तराधिकारी है। कल तक स्कूल-कॉलेज के शिक्षक और छात्र इसे ''ढ-ढक्कन'' का कहकर मज़ाक़ उड़ाया करते थे, पर इस बार गुरु जी के आशीर्वाद से राजनीतिशास्त्र में प्रथम श्रेणी में स्नातकोत्तर हो गया हैज!'

इतना सुनते ही समूचा वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा, प्रमोद पर फूलों की वर्षा होने लगी, हवा में ज़िंदाबाद के नारे तैरने लगे। तभी सहसा तेज आँधी उठी, आकाश में बिजलियाँ चमकने लगी, बादल गरजने लगे और बत्तियाँ गुल हो गईं।

अखंड भारत की सांस्कृतिक एकता के प्रवर्तक

डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी जयंती विशेष

धर्मेन्द्र सिंह लोधी

लेखक संस्कृति,पर्यटन,धार्मिक न्यास और धर्मस्व विभाग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हैं।

ऋषि और मनीषियों की इस पुण्य भारत भूमि पर हर युग में ऐसे अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है, जिन्होनें अपने कर्तव्य पथ पर चलकर सार्वजनिक जीवन में महत्तम ऊंचाई को प्राप्त किया है। इन महापुरूषों की शृंखला में डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नाम अग्रणी है। 06 जुलाई 1901 में कलकत्ता में जन्में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने एक महान देशभक्त शिक्षाविद्, राजनेता और मानवतावादी के रूप में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का प्रसार संपूर्ण भारत वर्ष में किया।

डॉ. मुखर्जी ने युगधर्म के आह्वान को स्वीकार किया। राष्ट्रीय एकात्मता और अखण्डता के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा ने उन्हें राजनीति के समर में झोंक दिया। अंग्रेजों की ''फूट डालो और शासन करो' नीति ने मुस्लिम लीग को स्थापित किया था। डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने हिन्दू महासभा का नेतृत्व ग्रहण कर इस नीति को चुनौती दी। भारत विभाजन को साम्प्रदायिकता की समस्या का समाधान बताने वालों को चुनौती देते हुये डॉ.मुखर्जी ने कहा था कि भारत का विभाजन कर पाकिस्तान बनाये जाने से पूरा देश मजहबी उन्माद की चपेट में आ जायेगा, और हमेशा-हमेशा के लिये साम्प्रदायिक सौहार्द्र नष्ट हो जायेगा। उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान बनाये जाने की मांग के पीछे इस्लामीकरण की अंतर्राष्ट्रीय योजना काम कर रही है। इससे निकृष्टतम मजहबी उन्माद और मतांधता घोर अनर्थ के रूप में सामने आयेगी। आज जिस तरह इस्लामिक आतंकवाद से सम्पूर्ण विश्व ग्रसित है, उसे देखकर डॉ.मुखर्जी के विचार प्रमाणित सिद्ध होते है।डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी भारत की भौगोलिक अखण्डता के साथ-साथ देश की धार्मिक और सांस्कृतिक एकता के भी पक्षधर थे। उनका मानना था कि केवल भौगोलिक एकता ही राष्ट्रीयता के लिए काफी नहीं है। किसी भी राष्ट्र के सभी नागरिक एक राष्ट्र तभी बन सकते हैं, जब वो एक समान संस्कृति द्वारा एक रूप हो जाए। उनका मानना था कि जिस देश की संस्कृति जितनी सुदृढ़ होगी वह राष्ट्र उतना ही अधिक शक्तिशाली होगा। उन्होंने अपने एक भाषण में कहा था- 'यदि भारत की स्वतंत्रता को सारपूर्ण बनाना हैं, तो भारत की संस्कृति के मूल्यों और आधारभूत तत्वों को ठीक से समझना पड़ेगा। जो राष्ट्र अपनी पुरातन उपलब्धियों से गौरव महसूस नही करता या प्रेरणा नहीं लेता वह कभी भी न तो अपने वर्तमान को निर्मित कर सकता है, और न ही भविष्य की रूपरेखा को तैयार कर सकता।''

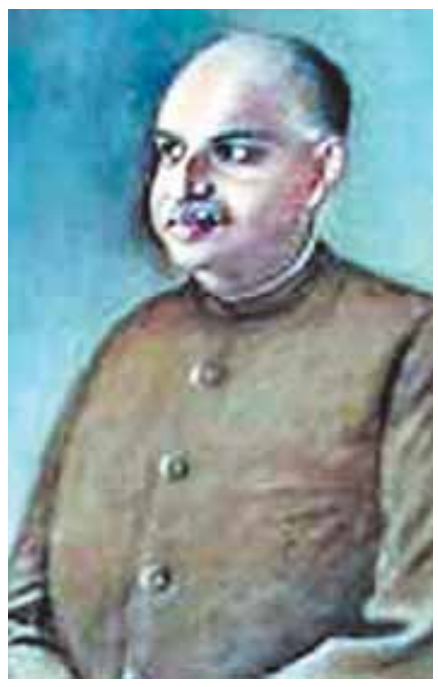

डॉ. मुखर्जी सभी भारतीयों के हृदय में भारत की एकता के लिये देश के प्रति एक सच्ची श्रद्धा और भारतीय संस्कृति के प्रति एक आदर का भाव होना आवश्यक शर्त मानते थे। उनका मानना था कि भारतवर्ष ने संपूर्ण विश्व को अपनी धर्म साधना की सबसे उत्तम चीजे दान की है। मित्रता एवं अहिंसा का संदेश दिया है। दुनिया के स्वार्थों की परवाह न करते हुए एक विशाल आध्यात्मिक अनुभूति का उपदेश दिया है। उनका मानना था कि भारत की संस्कृति में एक असीम शक्ति एवं आध्यात्मिक अनुभूति है, जिसके द्वारा संपूर्ण विश्व का मार्गदर्शन किया जा सकता है। लेकिन इससे पहले यह जरूरत है कि हम भारत की सुप्त संतति को जगाकर इसके आत्म विस्मरण को दूर कर दें। भारतवर्ष जब आत्मिक और सांस्कृतिक रूप से जाग जाएगा तो राजनीतिक प्रगति के साथ-साथ लौकिक उत्कर्ष के लिए नए-नए आयाम और कीर्तिमान स्थापित कर लेगा।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत की अखंडता और सांस्कृतिक एकता के लिए अपना सर्वोच्च सर्वस्व न्योछावर कर दिया। जन संघ की स्थापना के साथ ही उन्होंने कश्मीर को भारत का अविभाज्य हिस्सा बनाने का आंदोलन प्रारंभ कर दिया। धारा 370 के तहत कश्मीर को विशेष संप्रभुता देकर अलग संविधान, अलग कार्यपालिका और अलग ध्वज की प्रस्ताव को पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी स्वीकृति प्रदान कर चुके थे। डॉ. मुखर्जी ने पंडित नेहरू को समझने का बहुत प्रयास किया, और अंतत उन्हें इसके विरोध में सत्याग्रह करना पड़ा। ''उन्होंने एक देश में दो विधान एक देश में दो प्रधान और एक देश में दो निशान'' नहीं चलेंगे जैसे नारे लगाते हुए जम्मू कश्मीर में प्रवेश किया। शेख अब्दुल्ला की सरकार ने उन्हें जेल में डाल दिया। जहां रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई।

भारत की अखंडता के लिए स्वतंत्र भारत में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का पहला बलिदान था। उनके बलिदान के बाद भी धारा 370 के तहत कश्मीर को भारत के संपूर्ण संविधान के दायरे से पृथक रखने की साजिश लंबे समय तक चलती रही लेकिन भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री और डॉ. मुखर्जी के विचारों के संवाहक पीएम नरेंद्र मोदी ने धारा 370 को हटाकर उनके सपने को साकार कर दिया है। आज कश्मीर में तिरंगा शान से लहरा रहा है। एक देश में दो विधान एक देश में दो प्रधान और एक देश में दो निशान बनाने वाले षड्यंत्रकारियों का षड्यंत्र नाकाम हो गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धारा 370 को समाप्त करके दुनिया को बता दिया है ।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सच्चे अर्थों में राष्ट्र धर्म का पालन करने वाले साहसी, निडर, जुझारू देशभक्त थे। भारतवर्ष में जब भी राष्ट्र निर्माण की बात होगी, पौरूष की मशाल जलेगी, सत्य की आंख खुलेगी, अखंड राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक एकता की बात होगी, तो डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अवदान को सदा याद किया जाएगा।

जिंदगी को रौंद रहा है स्क्रीन टाइम

दृष्टिकोण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

सड़क पर चलते हुए बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है । यदि एक क्षण के लिए भी ध्यान हटा तो कुछ भी हो सकता है । पर आजकल कोई कुछ सोचता ही नहीं बस भाग रहा है । ऐसी बड़ी बड़ी गाडियां आ गई हैं कि हवा से बातें करते चलती हैं । रफ़्तार ऐसी की कुछ भी दावा कर दें । पलक झपकते ही यहां से वहां पहुंचा दें । पर कहां जाना है और इतनी भी क्या जल्दी ? इस विषय पर कोई कुछ सोचता ही नहीं है । यह भी पता नहीं है कि कहां जा रहा है और क्यों जा रहा है । बस सरपट भागा जा रहा है । हद तो तब हो जाती है जब वह अपने में ही गुम होकर भाग रहा है । आजकल स्क्रीन टाइम जिंदगी को रौंदते हुए जा रही है । किसी को कुछ दिखाई नहीं देता । जब आदमी मोबाइल में डूब जाता है तो वह न तो इस संसार में रहना है न ही भविष्य के किसी समाज व संसार में रहता है । वह तो बस समय को जैसे-तैसे काट रहा होता है । उसके लिए मोबाइल ही दुनिया है और दुनिया ही मोबाइल है । मोबाइल के नशे में बस गुमसुम सा वह जा रहा है । हर किसी की दुनिया इत्ती सी ही है जो स्क्रीन टाइम और स्क्रीन लाइट में खो सी गई है । गांव कस्बे से लेकर शहर तक हर मोबाइल पर गर्दन टेढ़ी कर बात करते लोग बस जा रहे हैं । ऐसे में कोई भी फ़ुर्सत वाला आदमी दिखता ही नहीं । जिसे देखो वही मोबाइल की धुन पर गुम होते भाग रहा है वह न तो वर्तमान में है न ही भविष्य में है वह बस भ्रम में जी रहा है । उसे बस यहीं लगता है कि जो दुनिया उसके पास है वह बस इसी समय है फिर जाने क्या होगा ? मोबाइल तकनीक ने लोगों को इस तरह से भ्रम में डाल दिया है कि एक क्षण के लिए भी आदमी इससे दूर नहीं होना चाहता, पढ़ा लिखा हो या अनपढ़, वह तो इसी में गुम सा हो गया है उसे पता ही नहीं है कि वह ड्राइविंग सीट पर है या बगल की सीट पर बैठा है उसका यह व्यवहार मोबाइल और ड्राइविंग दोनों के हिसाब से खतरनाक है पर आजकल की जो पीढ़ी है वह इस तरह से व्यस्त है कि वह इससे निकलना ही नहीं चाहती । यह बात अलग है कि इस चक्कर में कोई फंस जायें, किसी का एक्सिडेंट हो जाएं तो किसी को कोई लेना-देना भी नहीं है सब एक दो दिन बाद या उसी समय फिर उसी रफ़्तार से उसी तरह से चलते दिख जायेंगे । इस समय जो दुनिया है वह तात्कालिकता में जीने को ही सबकुछ मान रही है उसके लिए यह नहीं है कि बाद में आराम से बात करते हैं । यदि आप किसी से कहते भी हैं कि बाद में आराम से बात करते हैं तो वह आपको न जाने किस जमाने का आदमी समझकर मुंह बिगाड़ेगा । आपको मिसफिट भी कह सकता है । यह भी कह दे कि इस जमाने का आदमी है ही नहीं कहां इसके साथ चल रहे हैं यह तो पिछले ही जमाने में खोया रहता है अभी भी बैलगाड़ी और तांगे पर बैठ जाने की बात करता है पर अब भला कौन रफ़्तार से मुंह मोड़कर रह सकता है ।

पर हां यह भी सच है कि दुनिया कहीं भी चली जाएं आप जब सड़क पर चल रहे हैं तो आपको ही ध्यान रखना होगा कोई और आपका ध्यान रखने के लिए वहां नहीं है । यहां तो आंख नाक कान खोलकर चलना पड़ता है । कितनी जल्दी है हर कोई बस भाग रहा है । पता नहीं किस फेर में भाग रहा है । समझ में ही नहीं आता कि आदमी इतनी जल्दी में क्यों है ? कहां जाना है और इस तरह भला वह कहां पहुंचने की कोशिश कर रहा है । देखता हूं कि एकदम से बगल से ही बाइक लहराते हुए निकल गई, इतनी तेज गति में कि आंखों से ओझल होने में देर ही नहीं लगती । पर वह पहुंचा कहां अगले ही चौराहे पर रुका हुआ है, यहां रफ़्तार की कोई ऐसी जरूरत नहीं थी पर वह रफ़्तार में भाग रहा है । आजकल बाइक चलाने वाले बाइक चलाते नहीं है उड़ाते हैं । हवा में बात करते चलते हैं। दुनिया की गति में कौन किस तेजी से भाग रहा है इसे भला कोई और कैसे चेक करेगा । इसे तो हमें ही चेक करना है । गति पर सवार होकर दुनिया बस भाग रही है । दुनिया को भागने से फुर्सत नहीं है । जिसे जहां अवसर मिलता वहीं से भाग जाता है । आप यदि एक जगह पर रुके हैं तो आपके पास कुछ नहीं है । जब आप चलते हैं तो इस बहाने से दुनिया को भी एक नज़र देखते चलते हैं । आज की स्थिति, आज की सड़कों की व्यस्तता को देखना है तो शाम के समय से लेकर दूसरे पहर तक जो सड़कों पर दृश्य है उसे देखिए । यह चौराहा भी नहीं है बस एक सीधी सी सड़क है पर रफ़्तार से भरी हुई है, यहां जो जा रहा है उसे किसी की परवाह भी नहीं है वह बस भागा जा रहा है । एक मिनट में यहां से दस बाइक निकल जाती हैं और देख रहा हूं कि लगभग हर बाइक सवार मोबाइल पर बात करते करते जा रहा है । हद तो तब हो जाती है जब वह बाइक चलाते चलाते वाट्सएप मैसेज करने लगता है । बाइक सवार ही नहीं जो कार पर जा रहे हैं वो भी कम नहीं हैं सब बात करते करते ही ड्राइव कर रहे हैं । समझ में नहीं आ रहा है कि ये राह चलते चलते ऐसा कौन सा महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं जो अभी बात करना जरूरी ही हो , और यदि बात करना इतना जरूरी ही हो तो आराम से किनारे गाड़ी लगा कर बात कर लें किसी को दिक्कत नहीं होगी ।

आपके लिए हो सकता है कि बात करना जरूरी हो और आपके पास यह स्किल भी हो की चलते चलते बात कर लेते हों पर सड़क पर दूसरे भी तो चल रहे हैं जो आपके इस हुनर के आगे बोल्ड हो जाएं और एक्सिडेंट हो जाएं । बहुत सारे एक्सिडेंट केवल इसीलिए होते हैं कि गाड़ी चलाने वाला गाड़ी चलाने के साथ साथ कई सारे दूसरे कार्य भी करने लगता है ।

गाड़ी चलाना अपने आप में बहुत बड़ा कार्य है, इसे मल्टी टास्क के रूप में न करें, आप और अन्य की जान एक साथ खतरे में आ जाती है । कितना बड़ा संकट इस तरह से सामने रोज ही दिखता है , किससे कहा जाएं । सभी तो अपने को स्पेशल समझकर चल रहे हैं । जो गाड़ी पर बैठ गया है उससे भला कोई भी कैसे कुछ कहे, वह तो बड़ा आदमी है और बड़े आदमी को भला कोई कैसे टोंक सकता । आप कैसे कह सकते कि मोबाइल पर बात करते हुए गाड़ी कैसे चला रहे हैं । वह तो इसी तरह जायेगा और जायेगा, बचना आपको है तो आप बचें ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सहकारिता को मिल रहे नए आयाम : मोहन यादव

युवाओं को स्वावलंबी बनाने का सशक्त माध्यम हैं सहकारी समितियां

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के नेतृत्व में मध्यप्रदेश के सहकारिता क्षेत्र को नए आयाम मिल रहे हैं। दुग्ध-उत्पादन, औद्योगिक विकास सहित अन्य क्षेत्रों में हो रहे नए कार्यों में सहकारी समितियों को प्राथमिकता मिलेगी। उन्होंने कहा कि सहकारिता समाज को एक करने के साथ ही युवाओं को बेरोजगारी से बचाने का माध्यम है। रोजगार का अर्थ सिर्फ सरकारी नौकरी नहीं है। युवाओं को स्वरोजगार और स्वावलंबन से जोड़ने के लिए प्रदेश सरकार संकल्पित है और वर्ष 2025 को रोजगार एवं उद्योग वर्ष के रूप में मना रही है। उन्होंने तीन नए आपराधिक कानूनों का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में न्याय की देवी की आंखों से पट्टी हटी है, क्योंकि आंख पर पट्टी रहते हुए न्याय कैसे हो सकता है। नागरिकों के मूल अधिकार संविधान में उल्लेखित हैं और इसी भावना से व्यक्तियों के आपसी स्वावलंबन और सहभागिता का समावेश सहकारिता में है। वर्तमान सरकार में सहकारिता को लेकर व्यवस्था पूरी तरह पारदर्शी है। नई समिति की पंजीयन प्रक्रिया 30 दिन में पूर्ण की जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय सहकारी दिवस के अवसर पर समन्वय भवन में म.प्र. राज्य सहकारी संघ एवं अपेक्स बैंक ट्रेनिंग कॉलेज की ओर से आयोजित सहकारी युवा संवाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सहकारिता ध्वज फहराकर

समन्वय भवन में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया। अपर मुख्य सचिव श्री अशोक वर्णवाल कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम में अतिथियों को पौधा भेंटकर स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सहकारी युवा संवाद कार्यक्रम में उपस्थित महाविद्यालयीन विद्यार्थियों से संवाद किया और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सहकारिता से उद्योग प्राप्त करने वाली 30 महिलाओं को सिलाई मशीन टूल किट वितरण के प्रतीक स्वरूप एक महिला को सिलाई किट प्रदान की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद सरदार वल्लभ भाई पटेल ने देश में सहकारिता का आंदोलन खड़ा करने के लिए गुजरात में अमूल की स्थापना की। हजारों लोगों को दुग्ध-उत्पादन से जोड़कर उनकी आय बढ़ाने और बेरोजगारी खत्म करने का कार्य किया। राज्य सरकार भी दुग्ध-उत्पादन बढ़ाने के लिए संकल्पबद्ध है। अभी दुग्ध-उत्पादन में प्रदेश तीसरे स्थान पर है, जो भविष्य में शीर्ष पर पहुंचेगा। इसी उद्देश्य से दुग्ध-उत्पादन में प्रदेश का योगदान 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें सहकारिता क्षेत्र की बड़ी भूमिका होगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवाओं को दिए मूल मंत्र- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवाओं से संवाद करते हुए उन्हें सहकारिता क्षेत्र से जुड़े मूल मंत्र दिए। उन्होंने कहा कि सहकारिता में आने का एक सूत्र है- जब भी कोई नया काम करें तो आत्मविश्वास मजबूत रखें। युवा जिस भी क्षेत्र में काम करना चाहते हैं, पहले उसका अनुभव लें और यह भी देखें कि सहकारी समिति के माध्यम से इस क्षेत्र में क्या-क्या किया जा सकता है। सहकारी समिति के नेतृत्वकर्ता का दायित्व है कि पहले वह स्वयं पूरी जानकारी रखें और दूसरे साथियों को भी बताएं।

सभी क्षेत्रों में युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए कार्य कर रही सरकार- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि युवाओं के जीवन की असली परीक्षा कॉलेज की शिक्षा पूर्ण होने के बाद शुरू होती है। राज्य सरकार सभी क्षेत्रों में युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए कार्य कर रही है। मध्यप्रदेश वन्य संपदा और जलराशियों से संपन्न है। प्रदेश में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए भी सरकार संकल्पित है। हमारे युवा सभी साधनों से संपन्न होकर प्रदेश को आग बढ़ाए, इसी भावना से राज्य सरकार कार्य कर रही है। इसी उद्देश्य से अलग-अलग मंचों पर युवाओं से संवाद किए जा रहे हैं, जिससे भविष्य में उन्हें भी नेतृत्व का अवसर मिले। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत 2047 में विकसित राष्ट्र बनेगा। सहकारिता और भारतीय दर्शन के माध्यम से हम सबके कल्याण की प्रार्थना करते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विद्यार्थियों की जिज्ञासा का किया समाधान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के सामने महाविद्यालय छात्र-छात्राओं ने युवा संवाद कार्यक्रम में कई जिज्ञासाएं रखीं। एक छात्रा के सहकारी समिति बनाने की प्रक्रिया और शासकीय कार्य-प्रणाली संबंधी प्रश्न का उत्तर देते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्तमान में सहकारिता में पारदर्शी व्यवस्था स्थापित की गई है और नई समितियों का पंजीयन 30 दिन में पूर्ण हो रहा है। एक अन्य छात्रा ने सहकारिता संबंधी विषय स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने का सुझाव रखा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हर विषय पाठ्यक्रम में रखना कठिन है। लोगों को स्वयं सहकारिता की ओर पहल करनी चाहिए। सहकारिता में सबका स्वागत है, इसमें शिक्षा या आय का कोई बंधन नहीं है।

मढ़ई क्षेत्र में जिप्सी चलाने वाली संगीता का मंच से कराया परिचय

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में सहकारिता के क्षेत्र में कई नवाचार हो रहे हैं। इसी के अंतर्गत को-ऑपरेटिव पब्लिक पार्टनरशिप (सीपीपीपी) के माध्यम से सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में सफारी चलाने के कार्य में भी महिलाओं की समिति सक्रिय है। उन्होंने मढ़ई क्षेत्र में जिप्सी चलाने वाली संगीता सोलंकी का मंच से परिचय कराया। संगीता ने बताया कि बाघ सहित कई वन्य प्राणियों से समृद्ध मढ़ई क्षेत्र में वे बिना डर के पर्यटकों को जंगल सफारी कराती हैं और प्रति माह लगभग 14 हजार रूपए की आय हो रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राजा हरिशचंद्र और प्रेमचंद की कहानी पंच-परमेश्वर का उदाहरण देते हुए सहकारी समितियों के संचालन में पारदर्शिता, स्पष्टता और न्यायप्रियता की महत्ता का उल्लेख किया।

एक देश एक विधान राष्ट्रीय कार्यक्रम 6 जुलाई को रवीन्द्र भवन में, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव होंगे शामिल

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय एकता और संवैधानिक अखण्डता के प्रणेता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 125वें जन्म-दिवस पर 6 जुलाई को शाम 6 बजे अंजनी सभागार रवीन्द्र भवन में एक देश एक विधान राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। 'एक देश दो विधान, एक देश दो प्रधान नहीं चलेगा'' अपने इस युगांतरकारी विचार से भारत की एकता की बुनियाद को अटल मजबूती देने वाले डॉ. मुखर्जी के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में वैचारिक सत्र होगा। साथ ही लघु फिल्म का प्रदर्शन और एक प्रदर्शनी भी लगायी जायेगी।

संतोष चौबे और डॉ. जवाहर कर्णावट मुंबई राष्ट्रीय सेमिनार में आमंत्रित

भोपाल। महात्मा गांधी द्वारा 1942 में मुंबई में स्थापित हिंदुस्तानी प्रचार सभा द्वारा आदिवासी साहित्य और उसकी चुनौतियां विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 5 जुलाई को मुंबई में किया गया है । इस संगोष्ठी में रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है ।साथ ही विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र के निदेशक डॉक्टर जवाहर कर्णावट को विशिष्ट वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया है। इस संगोष्ठी को देश भर के प्रमुख साहित्यकार भी संबोधित करेंगे ।इस संगोष्ठी के माध्यम से हिंदुस्तानी प्रचार सभा भारतीय साहित्य में आदिवासी स्वर को स्थान दिलाने की दिशा में एक सशक्त पहल कर रही है।

जिले की 216 वर्ग किलोमीटर जमीन खरमोर अभयारण्य से बाहर, 14 ग्राम के किसानों को राहत

केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर की पहल पर खरमोर अभयारण्य अब केवल 132 वर्ग किमी रहेगा

धार। जिले की सरदारपुर विधानसभा में खरमोर अभयारण्य का 348 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र डिनोटिफाइ किया गया हैं जिससे सरदारपुर विधानसभा की 14 ग्राम पंचायतों को राहत मिली हैं। इसको लेकर प्रदेश सरकार द्वारा राजपत्र भी जारी किया गया हैं। मध्य प्रदेश के धार जिले के सरदारपुर क्षेत्र स्थित खरमोर अभयारण्य को लेकर मध्य प्रदेश सरकार के वन विभाग ने अहम फैसला ले लिया है। इसके चलते 3 जुलाई को एक अधिसूचना जारी करते हुए खरमोर अभयारण्य के 348.12 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में से करीब 216 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल राजस्व जमीन में शामिल कर लिया गया है। अब अभयारण्य 132.5 वर्ग किलोमीटर में ही रह जाएगा। इस तरह के फैसले से धार जिले की सरदारपुर तहसील 14 ग्राम तथा झाबुआ जिले की पेटलावद व झाबुआ तहसील के कई ग्रामों के लोगों को लाभ मिलेगा। क्षेत्रीय सांसद तथा केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने अहम भूमिका निभाई हैं। उन्होंने ना सिर्फ इसको लेकर लगातार पत्राचार किया बल्कि संसद के विभिन्न सत्रों में भी इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाया था।

केंद्रीय राज्यमंत्री एवं धार-महू लोकसभा क्षेत्र सांसद सावित्री ठाकुर भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती ने मुख्यमंत्री डॉ मोहन जी यादव का जताया विशेष आभार।

जानकारी देते हुए राजगढ़ के भाजपा नेता नवीन बानिया ने बताया कि केंद्रीय राज्यमंत्री श्रीमती ठाकुर जब पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ी थी। तब उनके समक्ष प्रभावित गांवो के लोगों ने खरमोर अभयारण्य को लेकर अपनी समस्याएं बताई थी। जिसके बाद श्रीमती ठाकुर ने सबसे पहले संसद में आवाज उठाते हुए वर्ष 2014 में तत्कालीन वन मंत्री गौरीशंकर शेजवार व विजय शाह एवं तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से चर्चा कर इस मामले को दिल्ली तक पहुंचाया। तथा

तत्कालीन केंद्रीय वन मंत्री अनिल माधव दवे से इस फाइल को इस निर्णय स्तर तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर द्वारा इस मामले को लेकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तत्कालीन, वन मंत्री रामनिवास रावत से मुलाकात कर यहां की जमीन के बदले अन्य अभ्यारण में जमीन उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा केंद्रीय वन मंत्री भूपेंद्र यादव से भी मिलकर खरमोर अभयारण्य का मामला उठाया। खरमोर अभयारण्य की भूमि को संसोधित करवाने में तथा सरदारपुर विधानसभा की 14 ग्राम पंचायतों के लोगो को राहत दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर का क्षेत्र के नागरिकों ने आभार जताया है।

प्रभावित लोगों के साथ ही मंडल अध्यक्ष गिरधारी चौधरी, मदन चोयल, ओंकार जाट, भाजपा नेता मनोज माहेश्वरी, दारासिंह चौहान, नीलेश परमार, शुभम जोक्शन, पार्षद चिंटू चौहान, पंकज बारोड़, रमेश राजपूत, शंभूलाल परवार, नीलेश सोनी, मुकेश खिमुर, मोतीसिह राठौड़, ज्ञानेंद्र जैन, रामचंद्र कुमावत, मनोहर कुमावत, गेंदालाल राठौड़, उदय सिंह, बालसिह वसुनियां, मुकेश कुमावत, बाबूजी चौधरी, देवा सिंगार, देवेंद्र राउ सहित अनेक भाजपा कार्यकर्ताओं ने केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर का आभार व्यक्त कर क्षेत्र वासियों की ओर से उन्हें धन्यवाद प्रेषित किया है। मध्य प्रदेश के धार जिले के सरदारपुर क्षेत्र स्थित खरमोर अभयारण्य को लेकर मध्य प्रदेश सरकार के वन विभाग ने अहम फैसला ले लिया है। इसके चलते 3 जुलाई को एक अधिसूचना जारी करते हुए खरमोर अभयारण्य के 348.12 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में से करीब 216 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल राजस्व जमीन में शामिल कर लिया गया है। अब अभयारण्य 132.5 वर्ग किलोमीटर में ही रह जाएगा। इस तरह के फैसले से धार जिले की सरदारपुर तहसील 14 ग्राम तथा झाबुआ तहसील के कई ग्रामों के लोगों को लाभ मिलेगा। गौरतलब है कि वन विभाग द्वारा पक्षी-विज्ञानी सालीम अली की खोज के बाद और उनकी पहल पर 4 जून 1983 को धार जिले के सरदारपुर क्षेत्र में और उससे लगी हुई करीब 348.12 वर्ग किलोमीटर राजस्व क्षेत्र को अभयारण्य घोषित किया गया था।

केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज विदिशा संसदीय क्षेत्र के ग्राम खिवनी खुर्द पहुंचे

आदिवासियों के टूटे घरों का जायजा लिया और नुकसान की भरपाई का आश्वासन दिया

भोपाल। केन्द्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान शनिवार को अपने संसदीय क्षेत्र के खिवनी खुर्द गांव में पहुंचें। भारी बारिश के बीच शिवराज पहले ट्रैक्टर में सवार होकर और बाद में कीचड़ से सने रास्तों से पैदल ही खिलवी खुर्द गांव पहुंचें। यहां शिवराज सिंह ने वन विभाग के अमले द्वारा तोड़े गए आदिवासियों के घरों का निरीक्षण किया और पीड़ित परिवारों से नुकसान की भरपाई सहित उनकी समस्याओं पर चर्चा की। वहीं इस दौरान शिवराज सिंह ने आदिवासी बहन के अस्थाई रूप से बने घर में बैठकर उनके साथ भोजन भी किया। शिवराज सिंह ने कहा कि, भारतीय जनता पार्टी की सरकार का मूल मंत्र गरीब और आदिवासी कल्याण है, आदिवासी भाई-बहनों को पूरी तरह से न्याय मिलेगा।

मुख्यमंत्री मोहन यादव जी संवेदनशील है, गरीब कल्याण हमारी सरकार की प्राथमिकता- केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, इस संबंध में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी से हम एक बार मुलाकात कर चुके हैं, वो बहुत संवेदनशील हैं और उन्होंने संवेदनशीलता के साथ समस्या के समाधान की बात कही है, लेकिन अभी जो आज मैंने स्थिति देखी है, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, गरीब कल्याण हमारा मूल मंत्र है। आदिवासी हो या गरीब भाई-बहन हो, उन्हें समृद्ध बनाना, उनकी ज़िंदगी में खुशियाँ लाना ये हमारी सरकार का मकसद है, और इसलिए, इस काम को मिलकर हम लोग करेंगे। सरकार की संवेदनशीलता के कारण हम समस्या का हल करेंगे। आदिवासी भाई-बहनों को पूरी तरह से न्याय मिलेगा। वहीं शिवराज सिंह ने कहा कि, आदिवासियों का जो नुकसान हुआ है उसका पूरा सर्वे कर भरपाई की जाएगी। साथ ही जो भी तात्कालिक सहायता हो सकती है वो स्वेच्छानुदान से की जाएगी

मौके पर पहुंचकर आदिवासियों का दर्द समझा- केन्द्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, आज मैं स्थानीय विधायक और साथियों के साथ ग्राम खिवनी पहुंचा और पीड़ित परिवारों से चर्चा कर उनका हाल भी जाना और उनके दर्द को भी नज़दीक से समझा। शिवराज सिंह ने कहा कि, ये अमानवीय अन्याय कुछ सिरफिरे अधिकारियों ने किया है। मैं सभी की बात नहीं करता, लेकिन कुछ अधिकारियों ने गड़बड़ की है और इस शर्मनाक कार्रवाई को अंजाम दिया है। उन्होंने सरकार की छवि खराब करने का प्रयास किया है। ऐसे अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्वाई की जाएगी।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष ने किया एम्स भोपाल का दौरा, ओबीसी आरक्षण के पालन की सराहना की

भोपाल। एम्स भोपाल अपने कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में न केवल चिकित्सकीय उत्कृष्टता के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, बल्कि सामाजिक समावेशन और संवैधानिक दायित्वों के प्रभावी निर्वहन में भी एक मिसाल कायम कर रहा है। इसी क्रम में दिनांक 4 जुलाई 2025 को राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (एनसीबीसी) के माननीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री स्तर के गणमान्य पदाधिकारी श्री हंसराज गंगाराम अहीर ने एम्स भोपाल का औपचारिक दौरा किया। उनके साथ आयोग के सदस्य श्री भुवन भूषण कमल तथा सचिव श्रीमती मीता राजीवलोचन भी उपस्थित रहीं। अपने दौरे के दौरान माननीय अध्यक्ष ने निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर संस्थान की भर्ती प्रक्रिया, प्रवेश आंकड़ों तथा ओबीसी आरक्षण नीति के अनुपालन की गहन समीक्षा की। इस अवसर पर निदेशक द्वारा आयोग को वर्ष 2024 एवं 2025 की भर्तियों और प्रवेशों से संबंधित विस्तृत जानकारी सौंपी गई, जिसमें आरक्षण रोस्टर रजिस्टर भी सम्मिलित था। निरीक्षण के उपरांत माननीय श्री अहीर ने इस तथ्य पर संतोष व्यक्त किया कि एम्स भोपाल में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए आरक्षित सभी पद भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुरूप भरे गए हैं। उन्होंने संस्थान द्वारा संवैधानिक और विधिक प्रावधानों के पारदर्शी अनुपालन की प्रशंसा करते हुए कहा कि एम्स भोपाल ने ओबीसी समुदाय के अधिकारों की रक्षा में गहन ईमानदारी और प्रतिबद्धता का परिचय दिया है।

इंडेक्स मेडिकल कॉलेज के सुरेश भदौरिया पर फर्जी मान्यता दिलाने का आरोप, फरार

सीबीआई के छापे में फर्जीवाड़े का सरगना उजागर, सब कुछ नकली मिला

इंदौर। घोटाले और फर्जीवाड़े के मामले में सीबीआई ने छापे के बाद इंडेक्स कॉलेज के मालिक सुरेश भदौरिया के खिलाफ एफआईआर दर्ज की। इसके बाद से ही सुरेश भदौरिया को फरार बताया जा रहा है। सीबीआई टीम ने दूसरी बार कॉलेज से जुड़े लोगों के यहां जांच-पड़ताल की। इस दौरान टीम ने कई दस्तावेज जब्त किए। सीबीआई मामले को हर तरह से जांचकर पता लगा रही है, कि भदौरिया ने खुद के कॉलेज में फर्जीवाड़ा करने के साथ और कितने कॉलेजों की मदद की और पैसे लेकर उनकी मान्यता का नवीनीकरण करवाया है। पिछले दिनों सीबीआई की टीम ने 6 प्रदेशों के 40 ठिकानों पर छापे मारे थे। इस दौरान कई लोगों के खिलाफ मामले भी दर्ज किए गए। इनमें इंडेक्स मेडिकल कॉलेज के मालिक सुरेश भदौरिया पर भी शामिल हैं। केस दर्ज होते ही इंडेक्स कॉलेज के मालिक सुरेश भदौरिया गायब हो गए। सीबीआई की टीम उनके कॉलेज से संबंधित कई लोगों के यहां पर जांच पड़ताल करने के लिए भी पहुंची।

बताया जा रहा कि इंडेक्स मेडिकल कॉलेज के रजिस्ट्रार महाकाल सिंह चंदेल के तीन ठिकानों पर भी सीबीआई के आठ सदस्यों की टीम ने सर्चिंग की। टीम ने कॉलेज और मान्यताओं से संबंधित दस्तावेज जब्त किए हैं।

रावतपुरी कॉलेज से खुला फर्जीवाड़ा

सीबीआई की जांच छत्तीसगढ़ के रायपुर स्थित रावतपुरा सरकार मेडिकल कॉलेज से शुरू हुई थी। यहीं से देशभर में फैले मेडिकल कॉलेजों के नेटवर्क का खुलासा हुआ। जांच में पता चला कि 40 से अधिक कॉलेज मान्यता के इस फर्जीवाड़े में शामिल हैं। इसी दौरान इंडेक्स मेडिकल कॉलेज का नाम भी सामने आया।

भदौरिया सहित 35 पर केस

सीबीआई ने रिश्वत लेकर मेडिकल कॉलेजों को मनमाफिक मान्यता दिलवाने के मामले में इंडेक्स मेडिकल कॉलेज के चेयरमैन सुरेश भदौरिया सहित 35 लोगों पर धोखाधड़ी का केस दर्ज किया है। भदौरिया पर आरोप हैं कि वे मेडिकल कॉलेजों के चेयरमैन और डायरेक्टर से 3 से 5 करोड़ रुपए लेकर मनमाफिक मान्यता दिलवाते थे। भदौरिया ने कॉलेज में अस्थायी डॉक्टरों की नियुक्ति की और एनएमसी निरीक्षण के वक्त उन्हें स्थायी फैकल्टी बताया। इसके लिए बायोमेट्रिक अटेंडेंस सिस्टम में फिंगरप्रिंट क्लोन कर फर्जी थंब इंप्रेशन बनाए गए और रेगुलर अटेंडेंस दर्शाई गई।

धर्म सनातन की ध्वजा लेकर देश को आगे बढ़ाने का हो रहा है कार्य

ईश्वर की कृपा और संतों के आशीर्वाद से प्रदेश समृद्ध एवं खुशहाल : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। धर्म सनातन की ध्वजा लेकर देश को आगे बढ़ाने का कार्य हमारे देश के संत कर रहे हैं और ईश्वर की कृपा तथा संतों के आशीर्वाद से देश और प्रदेश समृद्ध एवं खुशहाल बन रहे हैं। उक्त विचार उप मुख्यमंत्री एवं सागर जिले के प्रभारी मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने सागर में आयोजित संत श्री रविशंकर रावतपुरा सरकार के जन्मोत्सव कार्यक्रम में व्यक्त किए। इस अवसर पर संत श्री रविशंकर जी महाराज, संत श्री आनंद ब्रह्मचारी, संत श्री रामलखन महाराज, संत श्री सुदर्शन दास जी, विधायक श्री प्रदीप लारिया, महापौर श्रीमती संगीता तिवारी, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री हीरासिंह राजपूत, श्री श्याम तिवारी, श्रीमती रानी कुशवाहा, श्री गौरव सिरोठिया सहित बड़ी संख्या में संत समुदाय, जनप्रतिनिधि एवं भक्तगण उपस्थित थे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि तन, मन और जीवन को समर्पित करने वाला व्यक्ति ही संत बन सकता है, और यही कार्य हमारे संत श्री रविशंकर महाराज कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि धर्म सनातन की ध्वजा लेकर देश और प्रदेश को समृद्ध बनाने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि रावतपुरा सरकार का संकल्प है कि 11 सदाशिव शंकर जी की मूर्तियाँ स्थापित की जाएंगी, जिनमें से सागर में 75 फीट ऊँची सदाशिव की मूर्ति का लोकार्पण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि तेरा तुझको अर्पण, मेरा क्या लागे की भावना की तर्ज पर ही सरकार कार्य कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि संतों की वाणी पर कोई तर्क नहीं किया जा सकता; उनकी वाणी को श्रद्धा से ग्रहण कर उसे आगे बढ़ाने का कार्य किया जाना चाहिए। रावतपुरा सरकार द्वारा देशभर में 200 स्थानों पर शिक्षा, स्वास्थ्य और जनकल्याण की संस्थाएँ संचालित की जा रही हैं। शिक्षा की संस्थाएँ खोलकर गरीबों को शिक्षित करने का कार्य कर समाज को नई दिशा प्रदान की जा रही है। उन्होंने कहा कि हमारे प्रदेश में संत-महात्माओं का वास है, इसलिए हमारा प्रदेश सुखी और समृद्ध है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रावतपुरा सरकार ने हमें दो मंत्र दिए हैं, जिन पर मैं चल रहा हूँ। पहला, मंदिरों को बेहतर बनाएं और दूसरा यदि कोई व्यक्ति आपके समक्ष अपनी समस्या लेकर आए, तो उसका कार्य तत्काल करें। इससे हमें आत्मिक शांति मिलती है।

ग्रामीण विकास मंत्री श्री पहलाद पटेल ने कहा कि आध्यात्मिक मार्ग, तपस्या और तप का मार्ग होता है, जिस पर चलना अत्यंत कठिन होता है। जो व्यक्ति इस मार्ग पर चलता है, वही महात्मा बनता है, क्योंकि तपस्या और तप से नई ऊर्जा प्राप्त होती है। इस ऊर्जा के सामने माया भी टिक नहीं पाती। उन्होंने बताया कि वर्ष 1990 मं हम रावतपुरा सरकार के चरणों में पहुँचे और लगभग 10 से 11 वर्षों तक उनके आशीर्वाद और तपस्या का लाभ प्राप्त किया। उनकी तपस्या से मिली अनुशासन और ऊर्जा की सीख से आज मैं देश और प्रदेश की सेवा कर पा रहा हूँ। उन्होंने कहा कि मौन साधना भी एक बड़ी तपस्या होती है, और यह रावतपुरा सरकार में विद्यमान है। उन्होंने कहा कि गुरु ने अपने शिष्यों को नियमों की पुस्तिका प्रदान की है, और सभी को उसी पुस्तिका के अनुसार भक्ति करनी चाहिए तथा नियमों का पालन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी भक्ति स्वार्थ या लाभ की नहीं होनी चाहिए, बल्कि श्रद्धा और समर्पण की होनी चाहिए। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि श्रद्धा, भक्ति और आस्था का महाकुंभ है रावतपुरा सरकार का जन्मोत्सव, प्रकटोत्सव। उन्होंने कहा कि इस महाकुंभ में रावतपुरा सरकार द्वारा जो 75 फीट ऊँची भगवान शंकर की मूर्ति स्थापित की गई है, उससे सागर की माताओं, बहनों और श्रद्धालुओं को मकरोनिया-खुरई रोड के साथ-साथ शहर के मध्य भगवान शंकर की पूजा-अर्चना करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि रावतपुरा सरकार के व्यक्तित्व में सज्जनता, निर्मलता, धैर्य और दया भाव कूट-कूटकर भरे हैं। वे निरंतर धर्म, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि रावतपुरा सरकार ने वेदांती को एक तीर्थ स्थल बना दिया है, जहाँ मथुरा, काशी और वृंदावन का अनुभव वेदांती धाम में प्राप्त होता है।

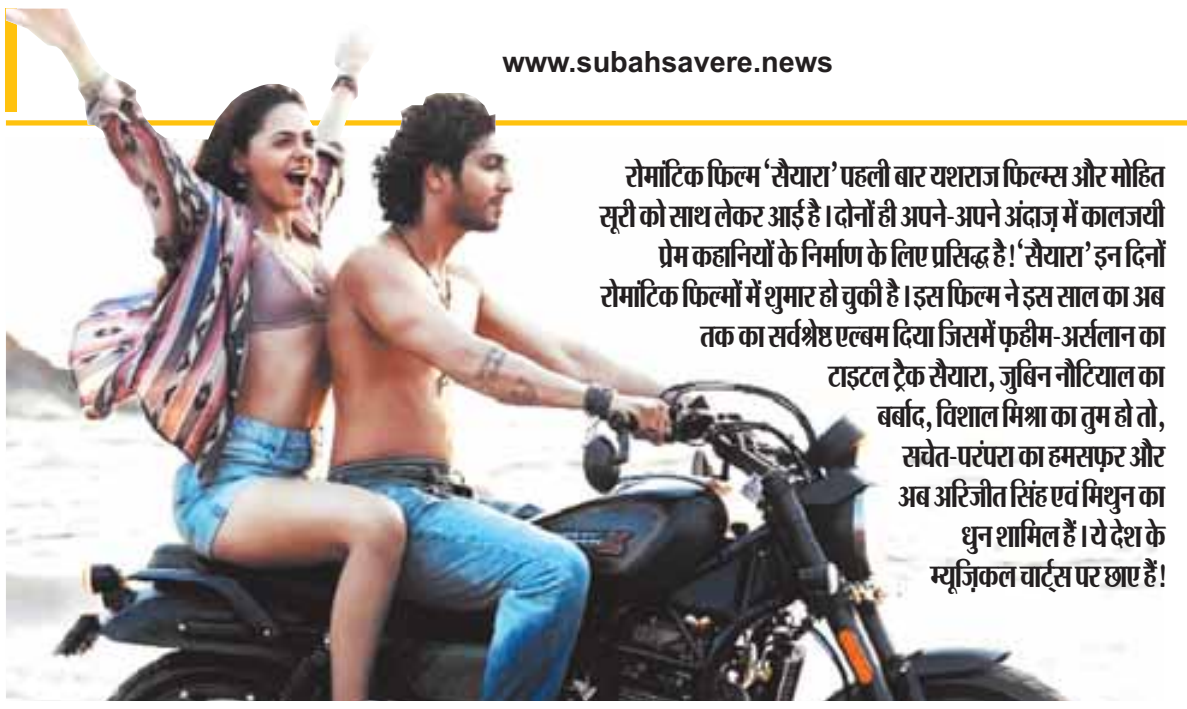

रोमांटिक फिल्म 'सैयारा' पहली बार यशराज फिल्म्स और मोहित सूरी को साथ लेकर आई है। दोनों ही अपने-अपने अंदाज़ में कालजयी प्रेम कहानियों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है! 'सैयारा' इन दिनों रोमांटिक फिल्मों में शुमार हो चुकी है। इस फिल्म ने इस साल का अब तक का सर्वश्रेष्ठ एल्बम दिया जिसमें फ़हीम-अर्सलान का टाइटल ट्रैक सैयारा, जुबिन नौटियाल का बर्बाद, विशाल मिश्रा का तुम हो तो, सचेत-परंपरा का हमसफ़र और अब अरिजीत सिंह एवं मिथुन का धुन शामिल हैं। ये देश के म्यूज़िकल चार्ट्स पर छाए हैं!

'सैयारा' का एल्बम आशिकी फिल्म को समर्पित

मोहित कहते हैं कि वे खुश हैं कि 'सैयारा' में भारत के सर्वश्रेष्ठ संगीतकारों ने अपना योगदान दिया। यह भी कहा कि 'सैयारा' का म्यूज़िक एल्बम उनके लिए पहली 'आशिकी' फिल्म को ट्रिब्यूट समर्पित है, जिसने उन्हें संगीत में गहरी दिलचस्पी लेने के लिए प्रेरित किया। महेश भट्ट द्वारा निर्देशित और राहुल रॉय एवं अनु अग्रवाल अभिनीत आशिकी एक ब्लॉकबस्टर थी, जिसकी संगीत ने पूरे देश को दीवाना बना दिया था। 'सैयारा' एल्बम उन सभी रोमांटिक एल्बम को ट्रिब्यूट है, जिन्हें हमेशा पसंद करता आया हूं। लेकिन, यह विशेष रूप से पहली 'आशिकी' को समर्पित है, जिसके संगीत ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया था। मुझे समझ में नहीं आया था कि क्या हुआ, पर मैं संगीत से प्रेम में पड़ गया और वह प्रेम कहानी हर फिल्म के साथ अब तक चल रही है।

मोहित इस बात से भी खुश हैं कि 'सैयारा' का म्यूज़िक एल्बम उन उम्मीदों पर खरा उतरा है, जो लोग यशराज फिल्म्स के साथ उनके रचनात्मक सहयोग को लेकर रख रहे थे। वाईआरएफ ने अपने 50 सालों के इतिहास में यश चोपड़ा और आदित्य चोपड़ा के निर्देशन में कई कालजयी प्रेम कहानियां दी। अब मोहित सूरी के साथ वाईआरएफ एक युवा और गहन प्रेम कहानी लेकर आया जो रोमांस शैली को बॉक्स ऑफिस पर फिर से एक बड़ी वापसी का मौका दे सकती है। ट्रेड विश्लेषकों का मानना है कि वाईआरएफ और मोहित सूरी की यह जोड़ी रोमांटिक शैली को फिर से मजबूत बनाने की सबसे बड़ी उम्मीद है।

मोहित कहते हैं कि बहुत कम होता है कि देश की सबसे बेहतरीन संगीत प्रतिभाएं एक ही फिल्म के एल्बम का हिस्सा बनें और मैं बहुत खुश हूं कि 'सैयारा' में भारत के सबसे उम्दा संगीतकारों ने अपना दिल और आत्मा इस एल्बम में डाला है। मुझे उम्मीद है कि यह एल्बम समय की कसौटी पर खरा उतरेगा। लोग एक अच्छी प्रेम कहानी देखना चाहते हैं और मेरी आशा है कि 'सैयारा' उन्हें पूरे दिल से मनोरंजन देगा। संगीत हमेशा दर्शकों को सिनेमाघरों तक खींचता है और मुझे लगता है हमने वो काम कर दिखाया है।

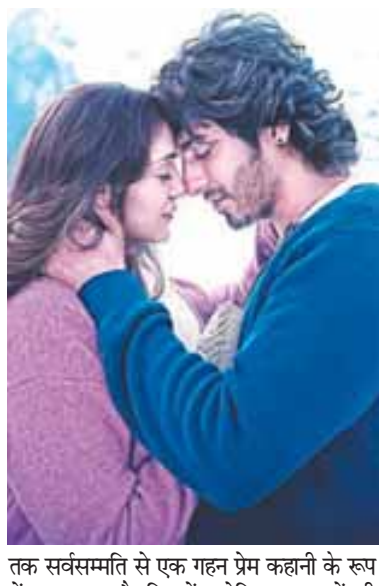

वे आगे कहते हैं कि दुनिया के सबसे ज्यादा फॉलो किए जाने वाले गायक अरिजीत सिंह से लेकर मिथुन, तनिष्क बागची, जुबिन नौटियाल, विशाल मिश्रा, सचेत-परंपरा, कश्मीर के फ़हीम और अर्सलान, और गीतों के जादूगर इरशाद कामिल तक इसमें हैं। इससे बड़ा संगीत संयोजन और क्या हो सकता है! दर्शकों की प्रतिक्रिया बता रही है कि उन्होंने एल्बम को दिल से पसंद किया है। यह सचमुच एक ड्रीम टीम है और मुझे खुशी है कि सैयारा में ये सब एक साथ आए।

वाईआरएफ की फिल्म 'सैयारा' को अब तक सर्वसम्मति से एक गहन प्रेम कहानी के रूप में सराहा गया है, जिसमें नवोदित कलाकारों की केमिस्ट्री और अभिनय की प्रशंसा हो रही है। यह फिल्म वाईआरएफ के नए हीरो के रूप में अहान पांडे को लॉन्च करती है। स्टूडियो ने अनीत पड्डा को अगली वाईआरएफ हीरोइन के रूप में चुना है। जिन्होंने चर्चित वेब सीरीज बिग गर्ल्स डोंट क्राई में अपने शानदार अभिनय से दर्शकों का दिल जीता था। मोहित अंत में कहते हैं कि मैं उम्मीद करता हूं कि लोग सैयारा को यूं ही प्यार देते रहेंगे और इसके गाने हर उस व्यक्ति से जुड़ेंगे जो प्रेम की भावना में विश्वास रखता है। 'सैयारा' का निर्माण यशराज फिल्म्स के सीईओ अक्षय विधानी द्वारा किया गया है। यह फिल्म 18 जुलाई को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी।

सलमान की नई फिल्म 'बैटल ऑफ़ गलवान'

सलमान खान की नेक्स्ट मच अवेटेड फिल्म 'बैटल ऑफ गलवान' का मोशन पोस्टर रिलीज हो गया है। एक्टर ने अपने इंस्टाग्राम पर मोशन पोस्टर को शेयर करते हुए, कैप्शन में गलवान वैली लिखा है। 'बैटल ऑफ गलवान' के पोस्टर में वो बिल्कुल नए अवतार में नजर आ रहे हैं। पोस्टर में सलमान का चेहरा खून में लथपथ है। वो बड़ी मूंछें के साथ गुस्से में दिख रहे हैं। बैकग्राउंड में बर्फ से ढके पहाड़ नजर आ रहे हैं।

ये फिल्म 2020 में गलवान घाटी में भारत और चीन की सेनाओं के बीच हुई खतरनाक झड़प पर आधारित है। जो बिना एक भी गोली चलाए लड़ी गई थी। ये जंग 15,000 फीट की ऊंचाई पर हुई थी। इस फिल्म को सलमान खान फिल्म्स प्रोड्यूस और अपूर्व लाखिया डायरेक्ट करेंगे। इसमें सलमान के अपोजिट अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह नजर आएंगी। साथ ही कई फिल्म में कई नए चेहरे

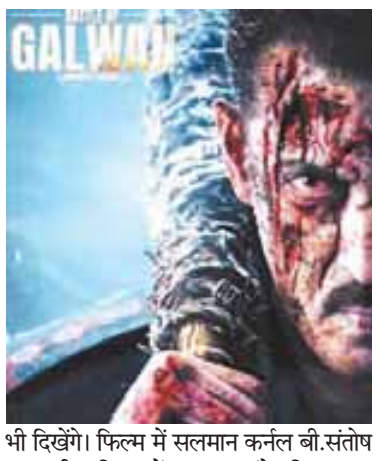

भी दिखेंगे। फिल्म में सलमान कर्नल बी.संतोष बाबू की भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म का म्यूजिक हिमेश रेशमिया देंगे। सलमान के पोस्ट पर उनके फैंस जमकर प्यार लुटा रहे हैं। उन्हें एक्टर का इंटेंस लुक काफी पसंद आ रहा है। एक यूजर ने लिखा- 'उम्मीद है कि ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बर्फीला तूफान लाएगी'। एक्टर के दूसरे फैंस ने लिखा 'टाइगर वापस आ रहा है।' वहीं एक अन्य यूजर ने कहा कि उनसे अब इंतजार नहीं हो रहा है।

2020 में गलवान घाटी में भारत और चीन की सेनाओं के बीच एक खतरनाक झड़प हुई थी। यह इलाका लद्दाख में है और लंबे समय से विवादित सीमा क्षेत्र माना जाता है। 15 जून को हुई इस भिड़ंत में दोनों देशों के सैनिकों की जान गई थी और ये लगभग 45 साल में पहली बार था जब भारत-चीन सीमा पर जानें गईं। इस लड़ाई में बंदूकें नहीं चलीं क्योंकि उस इलाके में हथियारों के इस्तेमाल की मनाही थी। सैनिकों ने डंडों, पत्थरों और हाथों से ही संघर्ष किया था। यह घटना भारत और चीन के रिश्तों में एक बड़ा मोड़ साबित हुई थी।

रियल बॉक्स

विमान हादसे, हाईजैक और फिल्मी कहानियां

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

अहमदाबाद से लंदन जा रही एक फ्लाइट उड़ान भरते ही दुर्घटनाग्रस्त हो गई। ये एक दर्दनाक हादसा था, जिसमें करीब ढाई सौ यात्री मारे गए। विमान हादसा ऐसी त्रासदी है, जो किसी को नहीं बख्शती। अहमदाबाद हादसे में भी यही हुआ। विमान जिस हॉस्टल पर गिरा, उसमें भी कई लोगों की मौत हुई। इतिहास के पन्ने पलटे जाएं तो ऐसी कई फ़िल्में याद आएंगी, जिनमें ऐसी त्रासदियों को कथानक का केंद्रीय विषय बनाकर फिल्माया गया। इनमें प्लेन क्रैश, हाईजैक और इमरजेंसी लैंडिंग जैसी रोमांचक घटनाएं दिखाई गई। विमान हादसे के बाद उन फिल्मों की चर्चा चल पड़ी हैं, जो फ्लाइट क्रैश, हाईजैक और एविएशन से जुड़ी सच्ची घटनाओं पर आधारित हैं। ऐसी कहानियों में रोमांच, डर और इंसानी हौसले की झलक मिलती है। लेकिन, विमान हादसों के ज्यादा प्रयोग हॉलीवुड की फिल्मों में हुए। हिंदी में ऐसी फ़िल्में कम बनी। जो फ़िल्में बनाई गई उनमें सच्ची कहानियां ज्यादा हैं। नीरजा, फ्लाइट, हाईजैक, जमीन, एयर लिफ्ट, बेलबॉटम और 'आईसी 814: कंधार हाईजैक' 'ऐसी ही कुछ फ़िल्में हैं जिन्होंने अपने रोमांच से दर्शकों को बांधकर रखा।

इनमें सबसे ताजा फिल्म है 'आईसी 814: कंधार हाईजैक' जो 2024 में आई। इसे ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज किया गया था। इस फिल्म की कहानी 4 दिसंबर 1999 को काठमांडू से दिल्ली आ रही फ्लाइट आईसी-814 के हाईजैक पर केंद्रित है, जिसे पांच आतंकवादियों ने हाईजैक कर लिया था। इस विमान को अमृतसर, लाहौर, दुबई, और अंत में तालिबान के कब्जे वाले अफगानिस्तान के कंधार एयरपोर्ट पर उतारा गया। यात्रियों के साथ मारपीट भी की गई थी। आतंकवादियों ने यात्रियों के बदले भारतीय जेल में बंद पाकिस्तान के कुछ साथियों को छुड़वाने की शर्त रखी थी। इस फिल्म को लेकर रिलीज के बाद काफी विवाद भी हुआ। मगर लोगों ने ओटीटी पर इस फिल्म को काफी पसंद किया। 2016 में आयी फिल्म 'नीरजा' भी दर्शकों की पसंद पर खरी उतरी। यह फिल्म 1986 में कराची में हुए पैन-एम एयरलाइंस फ्लाइट-73 के हाईजैक की सच्ची कहानी पर बनी थी। इसमें नीरजा भनोट नाम की एयर होस्टेस ने 359 यात्रियों की जान बचाने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी थी। नीरजा को मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया था। फिल्म में नीरजा भनोट का किरदार सोनम कपूर ने निभाया था। इस फिल्म को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले।

हाईजैक और विमान हादसे के अलावा ऐसी फिल्मों में कुछ अलग से सच्चे कथानक भी होते हैं। जैसे युद्ध भूमि में फंसे भारतीयों को विमान के जरिए विपरीत परिस्थितियों में सुरक्षित निकालना। 2016 में आई अक्षय कुमार की फिल्म 'एयरलिफ्ट' का कथानक इसी विषय पर रचा था। अक्षय ने रंजीत कटियाल का रोल निभाया, जो एक बिजनेसमैन है। यह फिल्म 1990 के खाड़ी युद्ध की सच्ची घटना पर आधारित है, जब 1 लाख 70 हजार भारतीय कुवैत में फंस गए थे। रंजीत ने भारत सरकार के साथ मिलकर इन लोगों को निकालने का बीड़ा उठाया। फिल्म में दिखाया गया कि कैसे विमानों के जरिए इतने बड़े पैमाने पर बचाव अभियान चलाया गया। इसी तरह 'बेल बॉटम' (2021) में अक्षय कुमार ने रॉ एजेंट का किरदार निभाया। यह फिल्म 1980 के दशक में हुए एक रियल हाईजैक मिशन पर बनाई गई। अक्षय एक जासूस है, जो हाईजैक हुए प्लेन को बचाने के लिए मिशन पर जाता है और सफलता से यात्रियों को निकाल लाता है। एक फिल्म 'हाईजैक' भी आई जिसमें शाइनी आहूजा अपनी बेटी को बचाने के लिए एयरपोर्ट इंजीनियर से हीरो बन जाते हैं। 'जमीन' में अजय देवगन और अभिषेक बच्चन आतंकवादियों से यात्रियों को छुड़ाने के मिशन पर निकलते हैं। दोनों फिल्में रोमांच से भरपूर हैं और दर्शकों को अंत तक बांधे रखती हैं। विमान के पायलट की गलती क्षम्य नहीं होती। क्योंकि, उसके हाथ में कई लोगों की जिंदगी होती है। लेकिन, फिल्म 'रनवे 34' (2015) में कॉकपिट में बैठा कैप्टन विक्रांत खन्ना ऐसा अनुभवी पायलट होता है, जिसे अपने अनुभव पर यकीन होता है। इसे निर्देशक और अभिनेता अजय देवगन ने

'रनवे 34' में दर्शाया है।

नए विषयों पर रोमांचक फ़िल्में बनाने में हॉलीवुड के फिल्मकार हमेशा ही आगे रहे। विमान हादसे पर ही अभी तक करीब 44 फिल्में बन चुकी है। इनमें कुछ फिल्मों का रोमांच इतना जबरदस्त है कि दर्शक स्क्रीन से आंखे नहीं हटाता। ऐसी कुछ फ़िल्में तो ऑल टाइम बेस्ट मानी गई। इन फिल्मों में बताया गया कि जान बचाने के लिए किस तरह के जतन किए गए। प्लेन क्रैश मामले हमेशा ही संजीदा विषय रहे हैं। ये हमेशा ही लोगों को झकझोरते रहे। साल 2000 में आई फिल्म 'फाइनल डेस्टिनेशन' की कहानी बेहद भयावह है। फिल्म में एलेक्स नाम के एक लड़के को सपना आता है, कि जिस विमान में वह सवार है, वह दुर्घटनाग्रस्त होगा। वह घबरा जाता है और विमान से उतर जाता है। उड़ान भरने के बाद विमान वास्तव में दुर्घटनाग्रस्त होता है। फिर उसके दोस्त अजीब हादसों में मरने लगते हैं। फिल्म में प्लेन क्रैश होने के जो दृश्य दिखाए गए, वे दर्शकों की रूह कंपाने वाले है। इसी साल (2000) आई फिल्म 'कास्ट अवे' प्लेन क्रैश की ऐसी कहानी दिखाती है, जिसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े होना तय हैं। इस फिल्म में निजी विमान दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है, और एक व्यक्ति द्वीप पर अकेला रह जाता है, जहां कोई नहीं होता। जीवित रहने और घर लौटने की कोशिश में वह सालों बिताता है। फिल्म की कहानी प्लेन क्रैश के भयावहता और बचे इंसान के जान बचाने की जद्दोजहद को परदे पर दर्शाती है।

सुली (2016) में रिलीज हुई फिल्म अमेरिकी पायलट चेसली सली सलेन बर्गर की सच्ची कहानी है। उन्होंने 2009 में खराब हुए इंजन के बावजूद विमान को न्यूयॉर्क के हडसन नदी में सुरक्षित उतारा था। सभी यात्री बच तो गए थे, लेकिन जांच एजेंसियां उनके फैसले पर सवाल उठाती हैं। टॉम हैंक्स का निभाया गया यह किरदार मानवीय समझ और फैसले की मिसाल था। 2014 की फिल्म 'नॉन-स्टॉप' विमान हादसे की बेहतरीन कहानियों में है। फिल्म में एक अमेरिकी एयर मार्शल को फ्लाइट में संदेश मिलता है, कि अगर पैसे नहीं भेजे, तो हर 20 मिनट में विमान में कोई न कोई मरेगा। वह सैकड़ों डरे यात्रियों के साथ उड़ान भरते हुए हत्यारे को पकड़ने की कोशिश करता है। विमान में मौजूद लोगों के लिए ये मौत से जूझने का अनुभव बताती है। 2012 की फिल्म 'फ्लाइट' भी विमान हादसे की कहानी है। इसमें पायलट टूटे हुए विमान को क्रैश-लैंड करता है और यात्रियों को बचाता है। वह हीरो बन जाता है। लेकिन, बाद में पता चलता है कि उड़ान भरते समय वह नशे में था। वह सच छुपाता है, पर उसे अपने करियर और सही काम के बीच चुनाव करना होता है। 1993 में आयी फिल्म 'अलाइव' में भी विमान हादसे के मार्मिक दृश्य हैं। फिल्म में रग्बी टीम का विमान बर्फीले एंडीज पहाड़ों में गिर जाता है। बिना भोजन और ठंड के, वे हफ्तों तक फंसे रहते हैं। यह सच्ची कहानी पर आधारित फिल्म है।

2001 की फिल्म 'जुबैदा' श्याम बेनेगल ने बनाई थी। कहानी का अंत खतरनाक विमान हादसे से हुआ था। इसमें जोधपुर के महाराजा और उनकी दूसरी पत्नी जुबैदा की दर्दनाक मौत हुई। 'जुबैदा' सच्ची घटना वाली फिल्म है। फिल्म में मनोज बाजपेई, रेखा और करिश्मा कपूर ने मुख्य भूमिकाएं थी। 40 के दशक में जुबैदा बेगम ऐसी अभिनेत्री थी, जिसका सौंदर्य बेमिसाल था। उनका निधन ऐसे ही खतरनाक विमान हादसे में हुआ जिसकी चर्चा सालों बाद आज भी की जाती है। श्याम बेनेगल ने इस कहानी पर फिल्म बनाकर घटना को फिर ताजा कर दिया। चुनाव प्रचार में जाने के दौरान 26 जनवरी 1952 की मनहूस सुबह यह हादसा हुआ था। राजा हनुवंत सिंह राठौर और जुबैदा ने जिस विमान से उड़ान भरी, वह राजस्थान के गोडवाड़ में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इस हादसे में दोनों की मौत हो गई। विमान हादसे पर श्याम बेनेगल की यह फिल्म उल्लेखनीय मानी गई, जिसका उल्लेख कई बार किया गया। यह क्लासिक फिल्म है। विमान हादसों, हाईजैक और हवाई मिशन से जुड़ी फिल्मों की संख्या अनगिनत है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

वो सितारे जो जिंदगी की जंग बहुत जल्द हारे

अशोक जोशी

हम जो परदे पर देखते है वह सितारों की रील लाइफ होती है। जिंदगी वह वास्तव में जीते हैं, वह उनकी रीयल लाइफ होती है। सिनेमा और नाटक में जो कुछ दिखाया जाता है या हम देखते हैं उसका वास्तविक जीवन से ज्यादा कोई संबंध नहीं होता है। परदे पर हमें

सितारे जीवंत, सुखी, स्वस्थ और ढाई घंटे में बरसों लम्बी जिन्दगी के दर्शन करा देते हैं। लेकिन, कुछ सितारे ऐसे भी होते हैं जिनकी जिंदगी किसी शार्ट फिल्म जितनी ही छोटी होती है। हाल ही में अचानक दुनिया को रुखसत करने वाली अभिनेत्री कांटा लगा गर्ल शेफाली जरीवाला की कहानी इसका ताजा सबूत है।

कोई कहता है कि आधुनिक जिंदगी की भागम भाग, व्यस्तता और तनाव ने इंसान का जीवन छोटा कर दिया है। लेकिन, यह बात सौ फीसदी सही नहीं है। हमारे यहां पहले भी कई दिग्गज कलाकार हुए, जिनकी रियल लाइफ रील लाइफ से भी छोटी रही है। पचास के दौर में श्याम एक जाने माने सितारे थे जिनकी एक फिल्म की शूटिंग के दौरान घोड़े से गिरने से मौत हो गई थी। 26 अप्रैल 1951 को जिस समय उनका जीवन समाप्त हुआ उनकी उम्र केवल 31 बरस ही थी। केएल सहगल हिंदी फिल्मों की अमर हस्तियों में से एक है। कई लोग शायद यही जानते होंगे कि उन्होंने एक लम्बा जीवन जिया होगा। लेकिन, हकीकत है कि शराब के नशे ने मात्र साढ़े 42 साल की उम्र में सहगल इस दुनिया से कूच कर गए।

हिंदी फिल्मों के विवेकानंद के नाम से मशहूर गुरुदत्त ने अपनी छोटी सी जिंदगी में प्यासा, कागज के फूल और चौदहवीं का चांद जैसी फिल्में दी। आज भी उनकी फिल्में एक्टिंग संस्थानों के कोर्स में पढ़ाई जाती है। लेकिन, इस जीनियस ने मात्र 39 साल में दुनिया को अलविदा कह दिया। पुराने सितारों के बाद यदि आज के सितारों पर नजर दौड़ाई जाए, तो इसमें भी कुछ ऐसे सितारे है जिन्होने फिल्मों और टीवी दुनिया में अपनी चमक बिखेरनी आरंभ ही की थी लेकिन मौत की देवी उन्हें अपने साथ लेकर इस दुनिया से चली गई।

सुशांत सिंह राजपूत को कौन भूल सकता है, जिन्होंने 34 साल की उम्र में आत्महत्या कर ली। बिग बॉस-13 के विनर और टीवी के मशहूर अभिनेता सिद्धार्थ शुक्ला अब हमारे बीच नहीं हैं। हार्ट अटैक के कारण एक्टर की हुई अचानक मृत्यु ने सभी को हैरान कर दिया था। सिद्धार्थ सिर्फ 40 साल की उम्र में इस दुनिया से रुखसत हो गए। कुलजीत रंधावा 30 वर्ष की आयु में अपनी रियल लाइफ समाप्त कर परदे से लुप्त हो गए। हिंदी सिनेमा के मशहूर अभिनेता इंद्र कुमार महज 44 साल की उम्र में दुनिया छोड़कर चले गए। 28 जुलाई 2017 को हार्ट अटैक के चलते उनका निधन हो गया था। 2011 में एक फिल्म की शूटिंग के दौरान वे

हेलिकॉप्टर से सीधे जमीन पर गिर गए थे। यहीं से उनके जीवन में परेशानियां शुरू हुई थी। यह भी संयोग ही है कि इनके नाम से मिलते जुलते इंदर ठाकुर जो कि प्रसिद्ध खलनायक हीरालाल के बेटे और एयर इंडिया के पर्सर थे। 1982 में जब उनका विमान अटलांटिक महासागर के ऊपर से उड़ रहा था। एक आतंकी हमले में वह अपनी पत्नी सहित मारे गए।

ऐसा नहीं कि इन सितारों में मौत केवल नायकों पर ही कम उम्र में मेहरबान हुई। हिंदी सिनेमा की वीनस कही जाने वाली मोहक व्यक्तित्व की मलिका मधुबाला की मुस्कान आज भी दर्शकों के मस्तिष्क पर छाई है। अपने जमाने की खूबसूरत अभिनेत्रियों में से

एक मधुबाला बेहतरीन अदाकारा थी। हालांकि, फिल्मी करियर के साथ ही उनका जीवन भी छोटा ही रहा। उन्होंने 36 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह दिया था। बताया जाता है कि दिल की बीमारी की वजह से वह ज्यादा समय तक जीवित नहीं रह पाई। मधुबाला की तरह ही पांचवें और छठे दशक की ट्रेजडी क्वीन मीना कुमारी की रियल लाइफ भी किसी ट्रेजडी से कम नहीं थी। पारिवारिक विवाद और दुख से परेशान होकर शराब से नाता तोड़कर वह भी मात्र 39 वर्ष की उम्र में इस दुनिया से कूच कर गई। गीता बाली की शरारती अंदाज से भी दर्शक वाकिफ है। शम्मी कपूर की पत्नी और अपने जमाने की सफलतम नायिकाओं में एक गीता बाली भी 1 जनवरी 1965 को चेचक की शिकार होकर मात्र 34 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कर गई।

जब स्मिता पाटिल सिनेमा में आयी, तो लगा था कि मीना कुमारी की खाली जगह भर जाएगी। अपने छोटे से फिल्मी जीवन में स्मिता पाटिल ने न केवल समानांतर फिल्मों में अपनी जगह बनाई, बल्कि अमिताभ जैसे सितारे के साथ सितारा फिल्म 'नमक हलाल' की सफलता में भी बराबर का योगदान दिया। लेकिन, प्रसूति के दौरान पीलिया से पीड़ित होकर वह मात्र 29 साल की उम्र मे स्वर्ग सिधार गई। ऐसी ही असामयिक मौत ने उभरती नायिका दिव्या भारती को भी अपने आगोश में ले लिया। वह संभवतया सबसे कम उम्र में अपना जीवन समाप्त करने वाली नायिका है। सफलता के सिंहासन पर बैठी यह नायिका मात्र 19 साल की उम्र में एक हादसे का शिकार हो चल बसी।

बॉलीवुड की कुछ फिल्मों में नजर आईं एक्ट्रेस जिया खान भी बहुत छोटी उम्र में चल बसीं। जिया ने 3 जून 2013 को अपने जुहू स्थित घर में खुदकुशी कर ली थी। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत हिंदी सिनेमा के शहंशाह अमिताभ बच्चन के साथ साल 2007 में आई फिल्म 'निशब्द' से की थी। इसके बाद उन्होंने 'गजनी' और 'हाउसफुल' जैसी फिल्मों में भी काम किया था। टीवी धारावाहिक 'बालिका वधू' से अपनी पहचान बनाने वाली प्रत्युषा बनर्जी ने जिंदगी से हार मान कर मौत को गले लगा लिया। प्रत्युषा ने महज 25 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह दिया था। उन्होंने 1 अप्रैल 2016 को अपने घर पर फांसी लगा ली थी।

कम उम्र मे दुनिया को रुखसत कहने वाली चंद नायिकाओं में सिल्क स्मिता का नाम भी शुमार है जिनकी 35 साल की उम्र में मृत्यु हो गई। इसके अलावा अदिति गुप्ता 24 वर्ष की आयु में, तरुणी सचदेव 14 वर्ष की आयु में.,नफीसा अली 41 वर्ष की उम्र में और हाल ही में शेफाली जरीवाला 42 वर्ष की आयु में जिंदगी के रंगमंच से अपनी भूमिका पूरी कर दूसरी दुनिया में चली गई।

जानवर को जानवर ही रहने दो...!

धर्म कर्म

प्रकाश पुरोहित

यह तो नहीं मालूम कि जानवरों की जिंदगी में हम इंसानों को कितनी इज्जत मिलती है या हम कितने उपयोगी हैं, लेकिन हमारे यानी मनुष्यों के जीवन में जानवर बेहद जरूरी हैं। यदि अपनी औलाद को ही कुछ बुरा कहना है तो हमारे पास सिवाय जानवर- स्मरण के दूसरा चारा नहीं है, इसीलिए पिता अपने ही औलाद का गधे या सूअर या उल्लू से रिश्ता जोड़ देता है। ना तो कहने वाले को होश रहता है, ना सुनने वाले को बुरा ही लगता है।

ना जाने कितनी बार इंसान को 'गधे का बच्चा' कहते सुन चुके हैं कि अब इस बात को गंभीरता से लेना ही बंद कर दिया है, बल्कि इस संवाद को पीढ़ी-दर-पीढ़ी रवानगी ही मिलती चली गई है। जानवर-स्मरण भी तभी होता है, जब हम कचकचा कर किसी को नीचा दिखाना चाहते हैं। कम अक्ल के लिए तो जैसे उल्लू का पेटेंट हो चुका है कि कहने वाला तो समझता ही है, बाकी भी समझ जाते हैं कि आशय क्या है।

पशु-प्रेमी भी जब गुस्सा निकालते हैं तो यह ध्यान नहीं रखते कि उनके घर में कोई जानवर पल रहा है। ये लोग जब मनुष्य के बारे में इतने लापरवाह हैं तो फिर जानवरों की चिंता करते होंगे, यह सोचना भी नासमझी ही कही जाएगी। कितने लोग हैं, जो यह जानते हैं कि आदमी और इंसान में क्या फर्क है तो फिर यह सोचना ज्यादती नहीं है कि ये लोग पशु और जानवर का भेद कभी जान पाएंगे!

जानवरों के साहित्य का हमें पता नहीं है, लेकिन हमारा साहित्य तो इस बात को साफ करता है कि 'आदमी को मयस्सर नहीं इंसा होना।' यह अलग बात है कि जो जानवर और पशु का फर्क नहीं समझते, उन्हें यह पता भी हो कि आदमी और इंसान होना अलग-अलग है। यही तो वजह है कि यदि हम किसी इंसान को आदमी कह दें तो उसे फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि उसे तो इनमें भेद ही पता नहीं है। किसी इंसान को अगर आदमी कह दिया जाए तो मारने नहीं दौड़ता है। पशु, सॉरी, जानवर का पता नहीं कि उन्हें पता है या नहीं कि उन्हें पशु कहना गलत है।

जब इंसान यानी आदमी को अपने बारे में ही ठीक से अंतर नहीं पता है तो फिर यह उम्मीद कुछ ज्यादा ही है कि जानवर और पशु का भेद समझ सके और यह महसूस कर सके कि जानवर को जानवर ही कहें, पशु ना कहें। सदियों से चली आ रही इस भूल को यदि किसी ने रेखांकित किया है तो अब वक्त आ गया है कि तमाम पशु... सॉरी, जानवर-प्रेमी इस बात या भेद को समझें और खुद को पहले दुरुस्त करें!

पशु और जानवर का मसला तो हल हो गया, लेकिन अभी 'ढोर' पर बहस बाकी है, क्योंकि यह भी आम इंसानों में धड़ल्ले से उपयोग किया जाता है, जब कोई कमअक्ली का नमूना पेश करता है। यह तो हम इंसानों का मानना है, लेकिन क्या ढोर भी पशु जैसा ही कोई क्रूर या कठोर शब्द है या इस पर अभी कोई विचार होना बाकी है। ढोर क्या संसदीय शब्द है या इसे भी पशु के बराबर रखा जाना चाहिए? यदि इस पर भी बात हो जाती तो आगे से ध्यान रखा जाता।

यहां सवाल यह भी उठाया जा सकता है कि जानवर को पशु कहना गलत है तो फिर मनुष्य को पशु कहा जा सकता है या नहीं या शब्दकोश से ही पशु को बाहर कर दिया जाना चाहिए ,जैसे अलाहाबाद को हटा कर प्रयागराज किया गया है या होशंगाबाद को नर्मदापुरम या मोती-पाक को मोती-श्री या ऐसा ही कुछ!

चूंकि यह साफ नहीं है तो बड़ी दुविधा हो गई है कि पशु सिर्फ जानवर को ही नहीं कहना चाहिए या फिर मनुष्य को भी इस शब्द से नहीं नवाजना चाहिए। जानवर का तो पता नहीं कि अच्छा या बुरा होता है तो यह मान लिया जाना चाहिए कि जानवर तो अच्छे ही होते हैं, तो फिर मनुष्य सभी अच्छे नहीं होते, वरना वोट के लिए धर्म के सहारे राजनीति करने की क्या जरूरत पड़ती। बुरे मनुष्य को क्या पशु कहना गलत होगा या इससे और कुछ हो ना हो, जानवर का कद ऊंचा हो जाएगा! पशु कहना तो क्रूरता है, लेकिन ढोर से क्या अभिप्राय निकलता है, यह भी विद्वतजनों को बताना चाहिए। अंग्रेजी का बढ़िया है कि वहां एनिमल यानी एनिमल... पशु, जानवर या ढोर का कोई लफड़ा ही नहीं है। वैसे भी ढोर में अपनापन है, जो पशु या जानवर में नहीं मिलता है, इसीलिए गृहमंत्री हिंदी को बढ़ाने की बात करते हैं। प्यार से धौल जमाते हुए किसी भी अपने को 'ढोर' कह सकते हैं, लेकिन पशु या जानवर नहीं। वैसे न्यायालय भी इस बात पर अब गौर करे कि किसी ने पशु कहा है तो यह क्रूरतम अपराध है और जानवर कह दिया है तो अपराध भले ही हो, क्रूरतम नहीं होगा!

देश की प्रथम नागरिक ने यदि पशु-जानवर भेद पर चिंतन कर विचार दिया है कि जानवर को पशु कहना क्रूरता है तो पशु-प्रेमियों को बोल साहित्य से इस शब्द का बहिष्कार करना चाहिए। बाप को हक है औलाद को गधे का बच्चा कह सके, लेकिन यह रियायत नहीं मिलनी चाहिए कि जानवर को पशु कहे। कहना है तो मनुष्य को पशु कह सकते हैं, लेकिन जानवर को तो जानवर ही कहने दें या रहने दें, कोई और नाम ना दें। संसद को भी इस विचार पर बगैर बहस के फैसला लेना चाहिए।

गर समझो तो यह भी प्यार है

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

एक ज़माना था जब कहावत थी, 'पैसा सब कुछ नहीं ज़िंदगी के लिए पर पैसा बहुत कुछ है ज़िंदगी के लिए।' उसी तर्ज पर आजकल प्रेम के लिए कहा जाता है कि 'प्यार सब कुछ नहीं ज़िंदगी के लिए पर प्यार बहुत कुछ है ज़िंदगी के लिए।' ये कैसी बात कर दी? फिल्मों, कहानियों में आज भी प्रेमी-प्रेमिका बिना पैसों के घर से भाग जाते हैं और थोड़े दिनों बाद अभावों के कारण प्यार दम तोड़ देता है क्योंकि कोशिश तो हम बहुत करते हैं प्यार बचा रहे पर भूल जाते हैं कि इस प्यार के बीच परिवार, बच्चे, समाज, पैसा भी आता है और प्यार अधमरा हो जाता है। सच भी है कि सुविधाओं के चलते, आरामदायक परिस्थितियों में प्रेम आराम से नदियों की भाँति बहता है। छोटी-मोटी चट्टानें आती हैं पर पार कर ली जाती हैं। आज के संदर्भ में हम प्यार के बदले स्वरूप को पहचान लें और उसे स्वीकारें तो शायद प्यार ज़िंदा रहेगा।

शादी से पहले प्यार ही सब कुछ होता है पर शादी के बाद प्यार के साथ जिम्मेदारी आती है ये हमें स्वीकारना होगा। खाना, शिक्षा, बिजली का बिल, बच्चों की पेरेंट्स मीटिंग की तरह प्यार भी रहेगा। अगर ये प्यार करते समय शादी से पहले ही समझ लिया जाए, इस बात पर चर्चा हो जाए तो प्यार ख़रामा ख़रामा चलता रहेगा क्योंकि शुरूआती दौर में चलता ही है मानो हम प्यार ही खायेंगे, प्यार ही पहनेंगे, प्यार लपेट कर सो जायेंगे, हमें छत नहीं चाहिये, खाना नहीं चाहिये बस तुम साथ हो इस वादे के साथ कि शादी के बाद हम सारी जिम्मेदारियों को साझा करते हुये प्यार करेंगे, तो बुरा नहीं लगेगा।

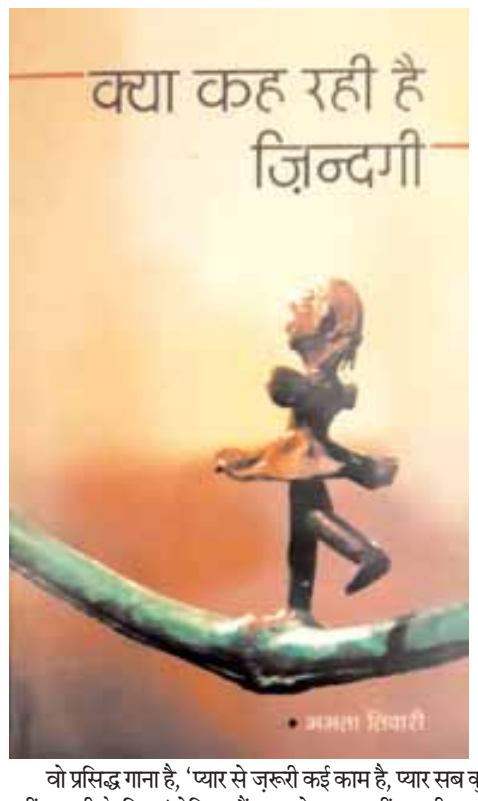

वो प्रसिद्ध गाना है, 'प्यार से ज़रूरी कई काम है, प्यार सब कुछ नहीं आदमी के लिए।' देखिए, मैं आपको डराना नहीं चाहती पर इस सच को हम जल्दी ही स्वीकार कर लें तो बार बार ये नहीं कहना पड़ेगा तुम बदल गए हो अब तुम पहले जैसा प्यार नहीं करते/करती। जिस दिन मुहब्बत को ज़िंदगी के एक पार्ट की तरह इस्तेमाल करोगे तो बहुत डिमांडिंग नहीं होंगे। 100 में से 25 प्रतिशत भी मिले तो खुश रहें। पैसा कमाना, अस्पताल, खाना, कपड़े, गाड़ी, केयरिंग ये भी प्यार का ही हिस्सा है ऐसा मान लिया जाए तो आप सुखी रहेंगे।

मेरी बीमारी में ख्याल रखना
बच्चों को स्कूल छोड़ने जाना
माँ बाप का ध्यान रखना
परिवार की गतिविधियों पर नज़र रखना
फोन पर दिन में इक बार बात करना
तुम्हारे कपड़े व्यवस्थित करना
जन्मदिन की तारीखें याद रखना
साथ मिल के फांके करना
छोटे-छोटे ख़त लिखना
बात दिल की शेअर करना
ये प्यार नहीं तो और क्या है?
बिन गुल बहार नहीं
तो और क्या है?
विशुद्ध प्रेम किसी ने नहीं देखा
जो छुपा है तेरे व्यवहार में
करार नहीं तो क्या है?
बिना कहे समझ ले मेरी बात
मेरा प्यार नहीं तो और क्या है?

जो भी जीवन में है उसे प्यार ही समझें। हर समय 'आई लव यू' कहना ही प्यार नहीं होता पर एक-दूसरे के एहसास को बिना कहे समझना और पूछना सुबह सवेरे इक-दूजे से और कह रही है जिंदगी भी प्यार होता है।

गरम पानी से बचे तो आग में कूदे!

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

ग्लास्टनबरी म्यूजिक फेस्टिवल की लाइव ब्राडकास्टिंग में बीबीसी ने फलस्तीन का साथ देने वाले आयरिश म्यूजिक बैंड 'नी-केप' को दिखाना बंद कर, रैपर 'बॉब विलन' के स्टेज को दिखाया। अफसोस, दावं पर उलटा पड़ गया। 'नी-केप' को वहां की जनता ने आम कर दिया और बीबीसी की हालत गरम पानी से निकल, आग में कूदने जैसी हो गई। 'नी-केप' को छोड़ा तो बॉब विलन ने भी न सिर्फ वही बातें कहीं बल्कि इजराइल आर्मी के खात्मे के नारे लगवा कर लौट आए। इसके बाद दोनों तरफ से बीबीसी को लानतें-मलामतें मिल रही हैं।

कहा जा रहा है कि इजराइल के खिलाफ दिखा रहे हो और फलस्तीन के सपोर्ट में 'नी-केप' की बात ना दिखाने से नाराज हैं। इतना ही नहीं, बीबीसी ने खुद ही डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाई, लेकिन जब दिखाने की बारी आई तो पीछे हट गई। कहा गया कि हमने यह फिल्म 'गजा-डॉक्टर्स अंडर अटैक' बनवाई थी, लेकिन जब फिल्म को देखा गया तो यही लगा कि इससे बीबीसी की सोच पर सवाल लग सकता है। बीबीसी इस फिल्म को अपने चैनल पर नहीं दिखा सकता। उसने उन डॉक्टरों से माफी मांगी है, जिनकी कहानी फिल्म में है। फिल्म ने तो रास्ता बना ही लिया और अब 'चैनल फोर' पर है, लेकिन इस तरह की हरकत से बीबीसी खुद का ही नुकसान कर रही है।

इस साल फरवरी में डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'हाऊ टू सर्वाइव अ वॉरजोन' को बीबीसी आई प्लेयर से हटाना पड़ा, क्योंकि उसमें जिस बच्चे की आवाज है, हमास के किसी नेता का लड़का है। 'गजा-डॉक्टर्स अंडर अटैक' डॉक्यूमेंट्री के प्रोड्यूसर का कहना है 'गजा के बारे में मुट्ठी भर यूके के वृत्तचित्र क्यों होने चाहिए? हम फोन पर हजारों लोगों की मौत देख सकते हैं, लेकिन टीवी पर नहीं?' उन्होंने कहा कि राजनीति के आगे झुकने से बीबीसी बर्बाद हो रहा है। इस आलोचना को सौ से ज्यादा बीबीसी कर्मचारियों ने दोहराया है, जिन्होंने बीबीसी की कवरेज पर वाले पत्र पर दस्तखत किए हैं। अब आते हैं फिल्म 'गजा-डॉक्टर्स अंडर अटैक' पर। डॉक्टर्स अंडर अटैक खुद को फोरेंसिक जांच की तरह पेश करता है, जिसमें दावा किया है कि आइडीएफ (इजराइल डिफेंस फोर्सेज) गजा के सभी छत्तीस अस्पतालों में फलस्तीनी डाक्टरों को निशाना बना रहा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, हमले नियम का पालन करते हैं। पहले अस्पताल पर बमबारी, फिर घेराव, उसके बाद टैंकों और बुलडोजर से हमला। स्टाफ को हिरासत में लिया जाता है। जब अस्पताल तहस-नहस हो जाता है तो सेना आगे बढ़ती है और दोहराती है।

'डॉक्टर्स अंडर अटैक' की ताकत इस बात में है कि यह थीसिस को बिना किसी जल्दबाजी के सामने रखता है। इसमें कोई हेरफेर नहीं है, कोई खलनायक नहीं है। हालांकि जो है, वह भयावह है, घबराहट होने लगती है। डॉक्टरों को बिना पानी या बिजली के अस्पतालों में काम करते दिखाया है, जो पहले से ही घावों का इलाज करने के लिए दौड़ रहे हैं। सैनिकों के सामूहिक बलात्कार का फुटेज है। फिल्म में बड़ी तादाद में घायल और मरे बच्चे दिखाए हैं।

फिल्म में उन डॉक्टर्स की कहानियां हैं कि किस तरह से जिंदगी की परवाह किए बिना मरीजों के लिए दौड़ रहे हैं, जान गंवा रहे हैं और इजराइल की सेना के जुल्म बर्दाश्त कर रहे हैं। बीबीसी के पास इस डॉक्यूमेंट्री को न दिखाने के अपने कारण हो सकते हैं, लेकिन उसे गजा के लोगों की कहानियों को बहादुरी के साथ बताने की जरूरत है।

प्रकृति का केनवास

फोटो- ऋतुराज बुड़ावनवाला,खाचरौद

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

विंसेंट वॉन गॉग परिस्थितियों से जूझता कलाकार

'असफलता ही सफलता की कुंजी है' इस बात से लगभग सभी लोग वाकिफ होंगे। कुछ लोग मानेंगे तो कुछ नहीं मानेंगे। इस मानने न मानने से इतर बस हमें अपने मानने पर भरोसा करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। हमें किसी भी परिणाम से इतर बस कार्य पर ध्यान देना चाहिए। हमें कोई भी कार्य खुद से करके उसके अच्छाई एवं बुराई पर विचार करना चाहिए। कलाकार विंसेंट वॉन गॉग असफलता से सफलता की ओर बढ़ने वाले कलाकार हुए। उपदेश देने से पूर्व श्रोताओं के दुःख दर्द को महसूस करते हुए आगे बढ़ा। जीवनयापन हेतु तमाम संघर्षों के बावजूद निराश ही होता रहा पर आगे बढ़ता रहा। पागल बेवकूफ का तमगा भी मिला, उसी को लिए लगातार आगे बढ़ने के प्रयास में लगा रहा।

25 वर्ष तक लगभग चार से पांच कामों में असफल होने के बाद विंसेंट को बोरिनोज़ के चर्च में मजदूरों को उपदेश सुनाने का मौका मिल गया साथ में काम भर का वेतन भी। पादरी बन गया था, अस्थाई नियुक्ति मिली थी। असफलता यहां भी साथ नहीं छोड़ी। कड़कड़ाती ठंड में देंह ऐंठ-ऐंठ जा रही थी जिसे गर्म रखने हेतु कोयले की आवश्यकता थी। इंतजाम कैसे होगा? परेशान था वॉन गॉग, जिस हेतु उसे कोयले के पहाड़ी तक जाना था, वो गया भी। काम भर का कोयला मिल तो गया पर वो वहां के संघर्ष से वाकिफ भी हो गया। लाख छुड़ाने के बावजूद भी कोयले की कुछ काली परतें चेहरे पर जमीं रहीं। ऐसी अवस्था में ही उपदेश देना हुआ था पहली बार वॉन गॉग को। सुनने वाले भी दीन, हीन, निरीह, काले कोयले से सने लोग थे। कोयले वाला उपदेशक उन्हें अपने ही बीच का लगा। लोगों का विश्वास वॉन गॉग पर बैठ गया।

ईश्वर, संघर्ष और जीवन जैसे तमाम गूढ़ रहस्यों को बड़े ही साधारण तरीके से समझाने में कामयाब हो गया था वॉन गॉग। बिल्कुल ही प्रवाह के साथ अपने शब्दों को रखते हुए लोगों को खुद से जोड़ पाने में भी सफल हो गया था पर दूसरों को ज्ञान बांटते-बांटते जल्द ही खुद भी गहरे अंधेरे में कहीं खो गया था। खोह में खोये कोयले की भांति। हीरा भी तो ऐसे ही होता है। किसी ने कहा कि अभी आप पूरे बोरिनोज़ को सही से जान नहीं पाये हैं, यहां के लोगों को ज्ञान से ज्यादा रोटी की आवश्यकता है, शरीर के न भरने वाले खोह को पाटने हेतु आलू की आवश्यकता है, दो जून खाने को कुछ मिल सके उसकी आवश्यकता है। ज्ञान बांटने निकले वॉन गॉग के मन में, उपदेशक को भी श्रोताओं जैसा ही होना चाहिए, जैसा भाव था। कोयले के खदान में उतरने के निश्चय के साथ वो आगे बढ़ा। जिनको उपदेश देना है उनके दुखों को पहले समझना होगा। बीती रात को जबरदस्त ठिठुरन रही, बाहर निकलना ही मृत्यु सा भयावह लग रहा था बावजूद इसके लोग भोर में ही ठिठुरते सिकुड़ते अपने काम पर जा रहे थे। वॉन गॉग भी उतर रहा था। दुख पसर कर वॉन गॉग के कलेजे तक उतर गया था। ढेबरी के रोशनी में लगातार खदान के नीचे उतरते हुए कई दफा सांसों के उखड़ जाने के एहसास से कांप उठना हुआ पर हार नहीं माना।

वो निरंतर नीचे उतरता गया। मृत्यु सिर पर खड़ी दिखाई पड़ रही थी पर उसका उतरना जारी था। मजदूरों को देखकर हौंसला मिलता रहा। मजदूर काले पसीने से नहाए हुए जान पड़ रहे थे। जमीन काली खेती सी जान पड़ रही थी। थूक भी काली आने लगी थी। दूसरों के चेहरे को देखकर वॉन गॉग खुद के चेहरे का अंदाजा लगा चुका था। संकरी

बिल्कुल ही संकरी खोह से उतरते हुए अब वो वाकई बोरिनोज़ को जान पा रहा था। छोटे बिल्कुल छोटे बच्चों को अपने उम्र से पहले बड़े होते देखना और औकात से कई गुना अधिक कष्टों वाले काम करते देखते हुए दिल पसीज गया उस पसीझते हुए दलदल में। खदान में कमियों का अंबार था, खदान के कभी भी बैठ जाने का खतरा भी था बावजूद इसके भी लोग निरंतर खट रहे थे, पेट और बाल-बच्चों के खातिर। खदान की दशा देख

अंदर तक सिहर उठा वॉन गॉग। किसी तरीके से जिंदा बाहर आने के बाद एकदम बदलाव सा हो गया था उसके व्यवहार में। छोटे बच्चों के कष्टों को देखकर भी वो तड़प उठ रहा था। खदान में मजदूरों की दशा देखकर उनके बीमार एवं बिलखते बच्चों से मिलने के बाद एकदम से तड़प उठा वॉन गॉग। रहन-सहन बिल्कुल ही बोरिनोज़ वालों की तरह एकदम गरीबी में होना चाहिए फलतः रहने का स्थान भी बदल लिया। बिल्कुल ही घटिया पूरे मुहल्ले के लोगों से भी घटिया जगह लेकर रहने लगा ताकि वहां रहने वाले लोगों को वो अपने बीच का लग सके। खदान के मजदूरों की मजबूरी ठेकेदार तक भी पहुंचाया पर उनकी अपनी मजबूरी मुंह बाये खड़ी थी। बिल्कुल ही आपा खो बैठा था वॉन गॉग। अब तक कलाकार बनने की बात नहीं थी। अभी तक वो एक अच्छा इंसान बनना चाह रहा था पर उसके साथ उसका चाहा कभी नहीं हुआ।अपने लिए बस जरूरत के कपड़े रखते हुए उसने बाकी बचे कपड़ों को ठिठुरन से कांपते जरुरत मंदो में बांट दिया। दिन भर कोयला बीनता, बीन कर ठंढ से तड़पते बच्चों को गर्म करने हेतु भट्ठियों में जलाने के लिए उनके परिजनों को दे देता और खुद सिकुड़ते हुए जीता। अपनी चारपाई भी बिमार बच्चे को देकर खुद घास पर सोने लगा। वॉन गॉग अपने पिता एवं भाई थियो के निगाह में एक सफल इंसान तो नहीं बन पा रहा था पर खुद के नजर में दूसरों के काम आने वाला एक अच्छा इंसान बन गया था। दर्द के अथाह सागर में गोंता लगा रहा था वॉन गॉग पर खुद को बचाने के स्थान पर दूसरों को उभारते हुए खुद और भी गहरा डूबता जा रहा था। अब तक मिले अपने वेतन को भी इन्हीं गरीबों के देखरेख में लगाता रहा। खुद किसी तरीके से काम भर का खा पा रहा था।

एक दिन कोयला बीन ही रहा था कि अंदर से बाहर को बेतरतीब भागती हुई बहुत सारी आकृतियां उसको दीख पड़ीं। अभी तो निकलने का समय भी नहीं हुआ है। ओह! जरूर कोई दुर्घटना हुई है। कई लोगों के न रहने की खबर आई थी। थका हारा वॉन गॉग पेट पकड़ कर वहीं बैठ गया था। काश कि एक दिन की छुट्टी करके सब कुछ पहले ही सही करवा दिया गया होता। एक दिन लोग पानी पीकर ही रह गये होते इतनी जानें तो नहीं जातीं। दुर्घटना के बाद वॉन गॉग का वेतन गांव भर में फिर खप गया। दर्द से तड़पते को दिलाशा देते हुए वॉन गॉग जी भर कर रोया था। उन सभी के कष्टों को दूर करने में लगा हुआ था। बोरिनोज़ का ही होकर रह गया था वॉन गॉग। बोरिनोज़ वालों से इस तरह घुल मिल कर रहना उसके अधिकारियों को बहुत बुरा लगा, पादरी पद को धक्का देने वाला लगा फलतः अधिकारियों द्वारा जल्दी ही उसे पादरी पद से हटा दिया गया। एक बार फिर वॉन गॉग बिना काम के हो गया पर वो अभी भी बोरिनोज़ वालों की सहायता करता रहा अपने सामर्थ्य भर। खाना-पीना भी धीरे-धीरे कम होता गया। बीमारियों से घिरता चला गया। आंखें धंसती जा रहीं थीं। हद से कहीं ज्यादा कमजोर हो गया था वो। समय से पहले ही बूढ़ा दिखने लगा था। धीरे-धीरे वॉन गॉग मजदूरों के काम का भी नहीं रहा। दिन रात भर आसमान निहारता रहता था। कुछ भी समझने में खुद को असमर्थ पा रहा था कि उसने खुद को किताबों डुबो देना तय किया। लगातार पढ़ते-पढ़ते जल्दी ही यहां से भी ऊब गया बिना मंजिल के राही की भांति घूमने निकल गया। घूमते हुए दूर बहुत दूर निकल गया। थक कर दीवार से सटे जगह पर वह बैठ गया। लगातार न समझ सकने वाली बातें सोचता रहा जबकि हाथ वहां खड़े एक बूढ़े व्यक्ति का चित्र बनाने में लगा हुआ था। चित्र तो बहुत अच्छा नहीं था पर भाव डूब कर बनाए कलाकारों जैसा ही था । कुछ समय बाद तो वॉन गॉग दिन-दिन भर खेतों में ही बैठा रहता था। पहली बार वहां के लोग किसानों के जैसे घंटों खेत में बैठ कर चित्रकारी करते किसी को देख रहे थे। कृति वॉन गॉग की पोटैटो ईटर है जो साभार गूगल से लिया गया है।